दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

नवंबर–दिसंबर 2025

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के मंच पर आईडीए के नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत

पुण्य स्मरण

सशक्त और समर्थ भारतीय डेरी सेक्टर

पशुओं के लिए संतुलित आहार

श्वेत क्रांति 2.0 के आधुनिक आयाम

IDA

www.indiandairyassociation.org

पशुपालन और डेयरी विभाग
Department of Animal Husbandry and Dairying

मोबाइल वेटरनरी यूनिट : पशुपालकों की असली सुविधा

घर बैठे ही आपके पशुओं को सही
इलाज मिल जाता है -
बिना भाग-दौड़, बिना इंतज़ार

गाँव की पशु चिकित्सा व्यवस्था और
मजबूत होती है- जिससे हर पशुपालक को
समय पर मदद मिल सके

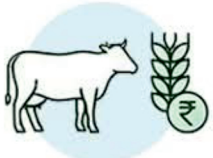

स्वस्थ पशु , ज्यादा उपज,
किसानों की
आजीविका और सुरक्षित

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 9 अंक : 6 नवंबर–दिसंबर, 2025

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्ष

डॉ. आर. एस. सोढ़ी

अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
गुरू काशी विश्वविद्यालय, भटिंडा
पंजाब

डॉ. ओमवीर सिंह
पूर्व उप प्रबंध निदेशक
मदर डेरी फ्रूट्स एंड वेजीटेबल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार सिंह
पूर्व प्रबंध निदेशक
झारखंड दुग्ध उत्पादक सहकारी
महासंघ लिमिटेड, रांची

श्री किरीट मेहता
प्रबंध निदेशक
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. बी.एस. बैनीवाल
पूर्व प्राध्यापक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा
एवं पशु विज्ञान
विश्वविद्यालय, हिसार

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
करनाल

डॉ. अनूप कालरा
सीईओ, आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन
गाजियाबाद

प्रकाशक

श्री हरिओम गुलाटी

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ 8
भारतीय डेरी–सशक्त, समर्थ और सतत्
डॉ. आर. एस. सोढ़ी

आयोजन 11
आईडीए मुख्यालय में मनाया गया राष्ट्रीय दुग्ध दिवस
डॉ. जगदीप सक्सेना

समारोह–सम्मान 15
पशुपालन और डेरी विभाग का राष्ट्रीय दुग्ध दिवस समारोह
स्रोतः पीआईबी

कीर्तिमान 18
राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर श्वेत क्रांति का सम्मान
प्रेस इंफार्मेशन ब्यूरो

पशु पोषण 28
गाय–बैलों की विभिन्न अवस्थाओं में संतुलित आहार
संजय कुमार व सहयोगी

आमदनी 31
सोलर पार्क और ग्रामीण आजीविकाः खेती–पशुपालन पर प्रभाव
राकेश चौधरी व सहयोगी

आधुनिकीकरण 34
केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा बायो–सीएनजी और फर्टिलाइजर प्लांट का उद्घाटन एवं पावडर प्लांट का शिलान्यास
स्रोतः पीआईबी

नवाचार 39
दुग्ध उत्पादों में खाद्य सुरक्षा, मिलावट नियंत्रण एवं अनुरेखण प्रणाली
डॉ. पवार ऋतिक नामदेव एवं डॉ. शिप्रा तिवारी

कविता, पशुपालन कैलेंडर और अन्य उपयोगी जानकारी

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य

एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. आर. एस. सोढ़ी

उपाध्यक्षः श्री ए.के. खोसला और श्री अरुण पाटिल

सदस्य

चयनितः श्री सी.पी. चार्ल्स, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचंद्र चौधरी, श्री चेतन अरुण नारके, श्री राजेश गजानन लेले, श्री अनिल बर्मन, डॉ. बिमलेश मान, डॉ. बिकाश चंद्र घोष, श्री संजीव सिन्हा, श्री बी.वी.के. रेड्डी, एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड और श्री अमरदीप सिंह चड्ढा **नामित सदस्यः** डॉ. जी.एस. राजौरिया, श्री सुधीर कुमार सिंह, डॉ. सतीश कुलकर्णी, डॉ. जे.बी. प्रजापति, डॉ. राहुल सक्सेना, श्रीमती वर्षा जोशी, डॉ. धीर सिंह और श्री एस. राजीव

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indiandairyassociation.org

क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाएं

दक्षिणी क्षेत्रः डॉ. सतीश कुलकर्णी, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** डॉ. जे.बी. प्रजापति, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः chairman@idawz.org/secretary@idawz.org फोन न. 91 22 49784009 **उत्तरी क्षेत्रः** डॉ. राहुल सक्सेना, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** श्री सुधीर कुमार सिंह, अध्यक्ष, c/o एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, डी.के. सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता– 700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** श्री अमित मूलचंद व्यास, अध्यक्ष; c/o एस एम सी कॉलेज ऑफ डेरी साइंस, एएयू कैम्पस, आनंद– 388110, गुजरात। ई–मेलः idagscac @ gmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, c/o प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवीएएसयू डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** डॉ. करुण चंदालिया, अध्यक्ष; 418–419, चौथा तल, सन्नी मार्ट, न्यू आतिशी बाजार, जयपुर– 302020 राजस्थान। ई–मेल : idarajchapter @yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** डॉ. इंद्रजीत सिंह, अध्यक्ष; मकान नंबर 1620, सेकटर–80, एस ए एस नगर, मोहाली– 140308, पंजाब। ई–मेलः secretaryidapb 2023 @ gmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री डी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, c/o पूर्व प्रबंध निदेशक, मिथिला मिल्क यूनियन, हाउस नं. 16, मंगलम एन्कलेव, बेली रोड, सगुना एसबीआई के पास, पटना–814146 बिहार, ई–मेलः idabihar2019@gmail.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.के. कनौजिया, अध्यक्ष, c/o डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल–132001 (हरियाणा), फोन : 9896782850, ई–मेलः skkanawjia@rediffmail.com **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** श्री कन्ना के.एस. अध्यक्ष; c/o डेरी विज्ञान विभाग, मद्रास वेटेरनरी कॉलेज, वेपेरी, चेन्नई– 600007, तामिलनाडु **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** प्रो.रवि कुमार श्रीभाष्यम, अध्यक्ष; c/o कॉलेज ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति–517502 ई–मेलः idaap2020@gmail.com **कर्नाटक राज्य चैप्टरः** श्री एन. बी. मराठे, अध्यक्ष, c/o डेरी साइंस कॉलेज, महागांव क्रॉस, कालाबुर्गी–585316, फोनः 9483124271 ई–मेलः ida.kar.chapter@gmail.com **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** डॉ. अरविद, अध्यक्ष; सहायक प्रोफेसर, डेरी विज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी– 2210051 फोनः 7007314450 ई–मेलः arvind @bhu.ac.in **पश्चिमी यूपी स्थानीय चैप्टरः** डॉ. अशोक कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष, c/o फ्लैट नंबर 1003/8, ज़ेन स्पायर, रामप्रस्थ ग्रीन्स, वैशाली, गाज़ियाबाद– 201010, उत्तर प्रदेश ई–मेल : ttreddy@ arvinddairy.com **झारखण्ड स्थानीय चैप्टरः** श्री पवन कुमार मारवाहा, अध्यक्ष; c/o झारखण्ड दुग्ध महासंघ, एफटीसी कॉम्प्लेक्स, धुर्वा सेक्टर–2, रांची, झारखण्ड–834004 ई–मेलः jharkhandida@gmail.com, डॉ. सतीश कुलकर्णी, **तेलंगाना लोकल चैप्टरः** श्री राजेश्वर राव चालीमेडा, अध्यक्ष; द्वारा डोडला डेरी लिमिटेड कार्पोरेट ऑफिस, # 8-2-293/82/A, 270/Q, रोड नंबर 10-C, जुबली हिल्स, हैदराबाद– 500 003, तेलंगाना

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अल्फा मिल्कफूड्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ इंडिया, गुरूग्राम (हरियाणा)
अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)
अपोलो एनीमल मेडिकल ग्रुप ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान)
एवाइवा इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)
अष्टविनायक टेक्नो क्रॉफ्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)
बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)
बनासकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)
बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)
बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
बिमल इंड्रस्टीज (हरियाणा)
बिहार राज्य दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
चिक्काबल्लापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति संघ लिमिटेड (केरल)
सीपी मिल्क एंड फूड प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
क्रीमलाइन डेरी प्रोडक्ट्स लिमिटेड (तेलंगाना)
कैलप्रो स्पेशलिटीज़ प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)
कॉलेज ऑफ डेरी एंड फूड टेक्नोलॉजी (राजस्थान)
डेरी विकास विभाग (केरल)
डोडला डेरी लिमिटेड, हैदराबाद (तेलंगाना)
डिजीवृद्धि टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
डेरी टेक इंडिया, पुणे (महाराष्ट्र)
डिवाइन कूलिंग सॉल्यूशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)
ड्यूक थॉम्पसन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
डेरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, (उत्तर प्रदेश)
ईस्ट खासी हिल्स जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड (मेघालय)
एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)
फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)
फ्लेवी डेरी सॉल्यूशन्स (गुजरात)
फ्रिक इंडिया लिमिटेड (हरियाणा)
फ्रोमाजेरीज़ बेल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
फूड एंड बायोटेक इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)
जी.आर.बी. डेरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)
गाँधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गाँधीनगर (गुजरात)
गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (गुजरात)
जीईए प्रौसेस इंजीनियरिंग (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)
गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)
ग्लैनबिया इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (कर्नाटक)
गोविंद मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, (महाराष्ट्र)
हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)
हटसन ऐग्रो प्रोडक्ट्स लि. चेन्नई (तमिलनाडु)
हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
हैम्स वेंचर्स एल एल पी (केरल)
आईएफएम इलेक्ट्रोनिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
इंडियन इम्यूनोलौजिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
इंडिया एक्सपोज़ीशन मार्ट लिमिटेड (दिल्ली)
आईएमटीबी इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, (उत्तर प्रदेश)
जे. एंड के. दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड (जम्मू)
जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)
जॉन बीन टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
जलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (महाराष्ट्र)
जे. एम. फिल्ट्रेशन टेक्नोलॉजी (महाराष्ट्र)

संस्थागत सदस्य

झारखंड राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ लिमिटेड, रांची (झारखंड)

कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कोएल्नमेस्से इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

कामथ्स ऑवरटाइम्स आइसक्रीम्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

कोल्हापुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

कीमिन इंडस्ट्रीज़ साउथ एशिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

केरल डेरी फार्मर्स वैलफेयर फंड बोर्ड (केरल)

खम्बेते कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)

कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)

क्वालिटी लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

लेहुई इंडिया इंजनियरिंग एंड इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

मालाबार रीजनल कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, कोझिकोड (केरल)

मॉडर्न डेरीज़ लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)

मेसे म्यूनकेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

एम एंड बी इंजीनियरिंग लिमिटेड (गुजरात)

माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (गुजरात)

मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मुराल्या डेरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (केरल)

मेहसाणा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक यूनियन लिमिटेड, (गुजरात)

एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)

नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड, आणंद (गुजरात)

नेचर डिलाइट डेरी एंड डेरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

नियोलॉजिक इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, तंजावुर (निफ्टेम–टी), (तमिलनाडु)

नियोजेन फूड एंड ऐनीमल सिक्योरिटी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, कोच्चि (केरल)

एनडीआरआई ग्रेजुएट्स एसोसिएसन (हरियाणा)

ओलाम फूड इंग्लेडिमेंट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)

पराग मिल्क फूड्स लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रॉम्प्ट इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)

पोरबंदर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पोरबंदर (गुजरात)

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

रेड काऊ डेरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)

रेप्यूट इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

रॉकवेल ऑटोमेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

आर.के. गणपति चेट्टियार, तिरूपुर (तमिलनाडु)

साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)

संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, पटना (बिहार)

सखी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमेटेड, अलवर (राजस्थान)

सार्थक इंजीनियरिंग (हरियाणा)

सिंघानिया मिल्क प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (उत्तर प्रदेश)

सीरैप इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

श्री राधे डेरी फार्म एंड फूड्स लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)

साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (नई दिल्ली)

श्रेबर डाइनामिक्स डेरीज़ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

श्री एडिटिव्स (फार्मा एंड फूड्स) प्राइवेट लिमिटेड, गांधी नगर (गुजरात)

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

श्री महालक्ष्मी डेरी प्राइवेट लिमिटेड, (तमिलनाडु)

स्टीलैप्स टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)

संस्थागत सदस्य

एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)
स्टर्लिंग एग्रो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)
शिव ट्रेडर्स इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
एस. एस. इक्विपमेंट्स (दिल्ली)
श्याम एंटरप्राइज़ेज (यूनिट : श्याम डेरी प्रोडक्ट्स) (उत्तर प्रदेश)
टेट्रा पैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
द कोयंबटूर डिस्ट्रिक्ट को–ऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड (तमिलनाडु)
द कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)
द पंचमहल जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
थर्मोफिशर साइंटिफिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, (गुजरात)
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)
विद्या डेरी, आनंद (गुजरात)
विजय डेरी प्रोडक्ट्स, सूरत (गुजरात)

वार्षिक सदस्य

आरुष टेस्टिंग कंसल्टेंसी प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)
एबीटी इंडस्ट्रीज़, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
एडेका इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
अमृत कॉर्प. लिमिटेड (यूनिट अमृत फूड) (उत्तर प्रदेश)
डीएसएस इमेजटेक प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)
अंकुश स्पेशलिटी इंग्रेडियेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
इंदुजा महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (महाराष्ट्र)
इमर्सन स्पेशलिटीज एलएलपी (महाराष्ट्र)
किशन मिल्क प्रोसेसर्स (गुजरात)
टेस्टराइट नैनो सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड, (उत्तर प्रदेश)
भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
कोरोनेशन वर्ष इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
गोरमल–वन एलएलपी (महाराष्ट्र)
जनता फूड एंड डेरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
कैरा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
लोटस डेयरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (राजस्थान)
लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ लिमिटेड, लेह (लद्दाख)
मैक्स मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड (पश्चिम बंगाल)
माओलकेकी फाउंडेशन (मणिपुर)
नर्मदा अमृत फूड प्राइवेट लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
नैनो इंस्ट्रूमेंट्स (कर्नाटक)
ऑप्टिक्स टेक्नोलॉजी (दिल्ली)
ओएस्टर एक्सिम प्राइवेट लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
पूर्णाश्री इक्विपमेंट्स (केरल)
रिवीलेशन्स बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड (तेलंगाना)
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)
रसेल फिनेक्स सील्स एंड फिल्टर्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)
एसकेएम एनीमल फीड्स एंड फूड्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, (तमिलनाडु)
श्री फीडस्टफ्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
सुरेन्द्र नगर जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड (गुजरात)
स्वदेश मिल्क प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (उत्तर प्रदेश)
एसएमसी कार्पोरेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड (उत्तर प्रदेश)
टैवरॉन इंजीनियर्स (तमिलनाडु)
तोशबो कंट्रोल्स प्राइवेट लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
वास्टा बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
वासिस्टा एंटरप्राइज सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड (तेलंगाना)
वीए एक्जिबिशन्स प्रा. लि. (तेलंगाना)
ज़्यूज़र इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

किसान

– मैथिलीशरण गुप्त

हेमन्त में बहुधा घनों से पूर्ण रहता व्योम है,
पावस निशाओं में तथा हँसता शरद का सोम है।
हो जाये अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ,
खाते, खवाई, बीज ऋण से हैं रंगे रक्खे जहाँ।
आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत में,
अधपेट खाकर फिर उन्हें है काँपना हेमंत में।
बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा,
है चल रहा सन सन पवन, तन से पसीना बह रहा।
देखो कृषक शोषित, सुखाकर हल तथापि चला रहे,
किस लोभ से इस आँच में, वे निज शरीर जला रहे।
घनघोर वर्षा हो रही, है गगन गर्जन कर रहा,
घर से निकलने को गरज कर, वज्र वर्जन कर रहा।
तो भी कृषक मैदान में करते निरंतर काम हैं,
किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम हैं।
बाहर निकलना मौत है, आधी अँधेरी रात है,
है शीत कैसा पड़ रहा, औ' थरथराता गात है।
तो भी कृषक ईंधन जलाकर, खेत पर हैं जागते,
यह लाभ कैसा है, न जिसका मोह अब भी त्यागते।
सम्प्रति कहाँ क्या हो रहा है, कुछ न उनको ज्ञान है,
है वायु कैसी चल रही, इसका न कुछ भी ध्यान है।
मानो भुवन से भिन्न उनका, दूसरा ही लोक है,
शशि सूर्य हैं फिर भी कहीं, उनमें नहीं आलोक है।

पशुपालन और डेयरी विभाग
Department of Animal Husbandry and Dairying

मोबाइल वेटरनरी यूनिट (MVUs) कैसे काम करती हैं?

पशुपालक द्वारा हेल्पलाइन (1962) पर कॉल किए जाने के बाद टीम तुरंत निर्धारित स्थान पर पहुँचती है

MVU टीम वहीं पर पशुधन का ट्रीटमेंट करती है

इसमें प्रशिक्षित पशु चिकित्सक और सहायक स्टाफ होते हैं

अध्यक्ष की बात, आपके साथ

भारतीय डेरी:सशक्त, समर्थ और सतत्

इस वर्ष 20–23 अक्टूबर के दौरान सैनटियागो चिली में इंटरनेशनल डेरी फेडेरेशन द्वारा विश्व डेरी शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। वैश्विक डेरी समुदाय ने यहां एकजुट होकर शिखर सम्मेलन के मुख्य विषय, 'सतत् विश्व का भरण–पोषण', पर चर्चा की। पहली बार दक्षिण अमेरिका के किसी देश में 40 देशों के डेरी विशेषज्ञों, नीति–निर्माताओं, वैज्ञानिकों और उद्योग के प्रमुखों ने एकत्र होकर डेरी के भविष्य पर चर्चा और विचार–विमर्श किया। मुझे यह बताते हुए हर्ष है कि इस प्रतिष्ठित आयोजन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने भी सक्रिय हिस्सेदारी की, जिसमें इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए), नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड, अमूल और अनेक भारतीय डेरी संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे। यह महत्वपूर्ण भागीदारी वैश्विक डेरी परिदृश्य में भारत के बढ़ते और प्रभावी नेतृत्व को रेखांकित करती है, विशेषरूप से सततता, पोषण और छोटे डेरी किसानों के समावेशी विकास के संदर्भ में भारत की अग्रणी भूमिका रही है।

इस वैश्विक चर्चा का समय बहुत सामयिक और महत्वपूर्ण है, क्योंकि वर्तमान में डेरी सेक्टर ना केवल घरेलू बल्कि वैश्विक स्तर पर परिवर्तनकारी दौर से गुज़र रहा है। भारत में वर्ष 2025 में दूध के उत्पादन में 4 से 6 प्रतिशत तक की वृद्धि का अनुमान है, जबकि वर्ष 2024 में हम 239.3 मिलियन टन दूध का रिकार्ड उत्पादन कर चुके हैं। इस तरह भारत विश्व के सबसे बड़े दूध उत्पादक के रूप में अपने गौरवशाली स्थान पर बना रहेगा। यह सतत् वृद्धि पशु आनुवंशिकी में सुधार, नई आहार पद्धतियों और सहकारिता के असाधारण विकास के कारण है। भारतीय डेरी सेक्टर देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में पांच प्रतिशत का योगदान करता है, और आठ करोड़ से अधिक लोगों की आजीविका का आधार भी है। इस तरह यह ग्रामीण आर्थिक विकास को गति देने वाला प्रमुख बल भी है।

भारतीय डेरी सेक्टर आज एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। इस समय दूध और डेरी उत्पादों की मांग बढ़ रही है, दूध के संग्रह की आर्थिकी में बदलाव आया है, वैश्विक कीमतों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी है, और वैश्विक बाजार में भी बदलाव आया है। हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम इन संकेतों या बदलावों को समझें और इनके अनुरूप अपनी दुग्ध संग्रह नीतियों तथा बाजार नीतियों में बदलाव करें, ताकि किसानों की आमदनी सुरक्षित रहे। साथ ही प्रसंस्करण उद्यमियों और डेरी व्यवसायियों को वैशिवक स्तर पर प्रतिस्पर्धी भी बने रहना होगा।

भारत में दूध का उत्पादन और प्रसंस्करित दूध की खपत निरंतर बढ़ रही है। अधिकारिक व्यापार और बाजार विश्लेषण के अनुसार हाल में दूध उत्पादन में साधारण बढ़ोतरी होने का अनुमान है, परंतु प्रसंस्करित डेरी उत्पादों की खपत तेजी से बढ़ेगी, क्योंकि फुटकर और संगठित डेरी के विभिन्न माध्यमों में तेज प्रसार संभावित है। बढ़ती घरेलू मांग के कारण दूध संग्रह की कीमतों में हमारे यहां लचीलापन है, जबकि वैश्विक स्तर पर उत्पादों की कीमत में ऐसा नहीं देखा जाता।

हम देख रहे हैं कि देश भर में सहकारी संघ और निजी प्रसंस्करण इकाइयां समय–समय पर दूध खरीद की कीमतें बढ़ाती रहती हैं। चारा/आहार, मजदूरी और लॉजिस्टिक्स (भंडारण, परिवहन आदि) की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी के कारण

ऐसा करना आवश्यक भी है। इससे दूध संग्रह के नेटवर्क में डेरी किसानों की भागीदारी सुनिश्चित होती है। हाल में प्रमुख डेरी सहकारिताओं ने दूध की संग्रह या खरीद की कीमतों में क्रमिक वृद्धि की घोषणा की है, और किसानों को निश्चित सहायता देने का निर्णय भी लिया है, जैसे सहकारी समिति के स्तर पर पशु आहार की कीमतों में समुचित बदलाव और कमीशन में बदलाव। इस तरह संपूर्ण मूल्य–श्रृंखला में लाभ–लागत के बीच एक संतुलन बना रहेगा।

ये उपाय किसानों के लिए सहायक हैं, परंतु इनसे प्रसंस्करण उद्यमियों के लाभ में गिरावट आ सकती है, जिससे फुटकर कीमतों में कुछ समय के लिए तेजी दिखाई देगी। इस स्थिति से बचने के लिए आवश्यक है कि मांग पर आधारित प्रबंधन उपाय अपनाये जाएं और कुशलता बढ़ाने के लिए भी आवश्यक कदम उठाये जाएं।

वैश्विक डेरी बाजार मंचों और अंतरराष्ट्रीय उत्पाद निगरानी प्रणालियों ने वैश्विक घटक बाजार पर नजर रखकर बताया है कि हाल के नीलामी दौर में इसमें नरमी आई है। इसके मुख्य रूप से तीन कारण बताये गये हैं–निर्यातक देशों में शिखर स्तर पर मौसमी उत्पादन, चीन द्वारा आयात की मात्रा में कमी और खरीददारों के खरीद व्यवसाय में अचानक आया बदलाव।

यदि संपूर्ण दूध पाउडर (डब्लूएमपी) और वसा–रहित दूध पाउडर (एसएमपी) की बाजार कीमतों में जरा–भी बदलाव आता है, तो शिशु आहार, एसएमपी–उत्पाद और चीज़ इनपुट्स के घरेलू बाजार में तेजी के असर दिखाई देता है। इससे निर्यात के लिए प्रतिस्पर्धा और प्रसंस्करण उद्यमियों के लिए कच्ची सामग्री के स्रोत के चयन की प्रक्रिया प्रभावित होती है।

बहु–पार्श्विक अनुमान (ओईसीडी–एफएओ) और बाजार की समीक्षाएं बताती हैं कि नये बाजारों में वैश्विक डेरी खपत निरंतर बढ़ती रहेगी, जबकि आपूर्ति कीमतों के अनुसार बदलती रहेगी। इस तरह मध्यम अवधि में कीमतों के उतार–चढ़ाव में एक संतुलन बना रहेगा। हालांकि, कुछ कारणों से बाजार में जोखिम तब भी बना रहेगा, जैसे पशु आहार और ऊर्जा की कीमतों में बदलाव, मुद्रा के अंतरराष्ट्रीय परिवर्तन की दर में उतार–चढ़ाव, भू–राजनीतिक गतिरोध और बड़े आयातक देशों के रूख में बदलाव, वैश्विक मांग में परिवर्तन आदि। इन कारणों से वैश्विक डेरी का परिदृश्य निरंतर बदलता रहता है। इन वैश्विक जोखिमों के कारण भारत को डेरी सेक्टर के कुछ क्षेत्रों में अपनी प्राथमिकताएं तय करनी होंगी, जैसे आपूर्ति श्रृंखला में लचीलापन, मूल्यवर्धित डेरी उत्पादों में विविधीकरण; और चुनिंदा वर्गों में निर्यात के लिए सक्षमता का विकास।

हाल में परंपरागत रूप से डेरी आधिक्य वाले देशों जैसे अमेरिका में फिर से सुधार देखा गया है। यहां डेरी सेक्टर में विकास की दर लगभग पांच प्रतिशत है, जो भारत से भी अधिक है। यह भारतीय डेरी उद्योग के लिए एक चेतावनी और चुनौती है। इस नये पहलू से यह संकेत भी मिलता है कि हमें अपनी डेरी की सफलता के आधार को एक बार फिर से आंकना और मजबूत करना होगा, और हमारी सफलता की कुंजी है एक कुशल और डेरी किसान हितैषी आपूर्ति श्रृंखला। भारत की सहकारी और संगठित डेरी प्रणाली ने ऐतिहासिक रूप से सुनिश्चित किया है कि उपभोक्ता द्वारा डेरी उत्पादों की चुकायी गयी कीमत का 70–80 प्रतिशत भाग उत्पादकों यानी डेरी किसानों तक पहुंचे। यह उत्पादकता, गुणवत्ता और सतत्ता को बनाये रखने के लिए एक सशक्त प्रोत्साहन है। हालंकि, हाल के वर्षों में यह मजबूती धीरे–धीरे कुंछ कमज़ोर पड़ी हैं और इसका कारण अकुशलता, संग्रह प्रणाली में जगह–जगह टूट और संपूर्ण श्रृंखला में मूल्य का असमान वितरण है।

विश्व के सबसे बड़े दूध उत्पादक के रूप में निरंतर शिखर पर रहने के लिए और करोड़ों डेरी किसानों की आजीविका को सुनिश्चित रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम एक बार फिर कुशलता को मजबूत करें और अपनी मूल्य प्रणाली में समुचित सुधार करें। अमेरिका से प्राप्त अनुभव दर्शाता है कि यदि नवाचार, किसानों के कल्याण और मूल्य–संवर्धित विकास पर जोर दिया जाए तो परिपक्व डेरी आर्थिकी फिर से गति और बल प्राप्त कर सकती है। इसलिए भारत को अपने सहकारी मॉडल को संरक्षित करने के साथ आधुनिक भी बनाना चाहिए और उत्पादकता बढ़ाने के लिए निवेश भी करना चाहिए। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि हमारी प्रत्येक नीति, उद्यम और पहल के केंद्र में डेरी किसान रहे।

अब समय आ गया है कि भारतीय डेरी उद्योग अपने आधार को सशक्त करे। इसके अंतर्गत मूल्य श्रृंखला की कुशलता, किसानों को समान लाभ, मजबूत घरेलू बाजार और निर्यात में तेज वृद्धि के लिए प्रयास करने होंगे। इन उपायों से दूध उत्पादन के वैश्विक नेतृत्व में हमारी सतत्ता बनी रहेगी।

नीतियों और कार्य–विधियों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता

किसानों की आमदनी की सुरक्षाः सहकारिताओं और प्रसंस्करण उद्यमियों को पारदर्शी तथा सामयिक मूल्य फार्मूला (वसा और ठोस–वसा रहित से जुड़ा) अपनाने के लिए प्रोत्साहन देना होगा। दूघ उत्पादन की लागत तय करने के लिए आदानों (इनपुट्स) पर दी जाने वाली सब्सिडी लक्ष्य निर्धारित करके बढ़ानी होगी, साथ ही विशाल स्तर पर पशु आहार कार्यक्रम भी चलाये जा सकते हैं।

संग्रह दक्षताः संग्रह की लागत और क्षति को कम करने के लिए कुछ सुविधाओं पर निवेश को बढ़ाना होगा, जैसे शीतलन क्षमता, डिजिटल दूध संग्रह रिकार्ड्स, सहकारी समिति के स्तर पर क्षमता विकास और चारे की एकमुश्त (पूल्ड) खरीद।

मूल्य–संवर्धन तथा निर्यातः प्रसंस्करण उद्यमियों को मूल्य श्रृंखला में विविधता लाने के लिए प्रोत्साहन देना होगा ताकि वे चीज़, शिशु पोषण आहार और संपूर्ण दूध पाउडर के वैल्यू पैक्स जैसे अधिक मूल्य वाले डेरी उत्पाद बना सकें और निर्यात के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन भी कर सकें। इससे वैश्विक बाजार खुलने पर भारत अधिक मूल्य वाले व्यापार के अवसरों का लाभ उठाने में समर्थ होगा।

बाजार सूचना और जोखिम प्रबंधनः वास्तविक समय में बाजार सूचना के विविध पहलुओं के प्रसार का सशक्तिकरण, जैसे घरेलू संग्रह का रूख, वैश्विक डेरी व्यापार का रूख, आहार मूल्य का सूचकांक, आदि करना होगा। बड़े स्तर के प्रसंस्करण उद्यमियों को अनुबंध नीतियों और बचाव की रणनीतियों पर मार्ग–निर्देशन की आवश्यकता है।

सतत्ता और उत्पादकताः आनुवंशिकी, आहार परिवर्तन दक्षता, मीथेन कम करने की कार्य–विधियों और महिला नेतृत्व वाले उत्पादक समूहों में समानांतर निवेश करने से प्रति इकाई लागत में कमी आएगी और डेरी फार्म की आमदनी में सुधार होगा।

भारतीय डेरी सेक्टर का लचीलापन और सहनशीलता इसके करोड़ों छोटे डेरी किसानों के दैनिक फैसले पर टिकी है। वैश्विक स्तर पर डेरी बाजारों में तेज उतार–चढ़ाव दिखाई देता है। किसानों की आमदनी को स्थायित्व देने, दूध संग्रह प्रणाली के आधुनिकीकरण और मूल्य श्रृंखला को मजबूत बनाने के लिए हमें एकजुट होकर सामूहिक करना होगा, ताकि हम भारतीय डेरी सेक्टर के घरेलू स्तर का सतत् और बड़े पैमाने पर विकास कर सकें। आईडीए सरकारों, सहकारिताओं और उद्योगों के साथ निकट संपर्क में काम करता रहेगा, ताकि इन प्राथमिकताओं को व्यावहारिक धरातल पर उतारा जा सके और करोड़ों डेरी किसानों की आजीविका सुरक्षित रहे। साथ ही दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा का विकास भी हो। डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों को एकजुट होकर, एक मंच पर कार्य करना आवश्यक है।

(आर. एस. सोढ़ी)

आयोजन

आईडीए मुख्यालय में मनाया गया राष्ट्रीय दुग्ध दिवस

प्रस्तुतिः डॉ. जगदीप सक्सेना
संपादक, दुग्ध सरिता
इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर आईडीए के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार सिंह का स्वागत

भारत में प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाया जाता है। इस दिन पूरा देश भारत में श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज़ कुरियन को स्मरण करता है, और श्रद्धांजलि अर्पित करता है। डॉ. कुरियन का जन्म इसी दिन वर्ष 1921 में केरल के कोझिकोड में हुआ था। डॉ. कुरियन ने देश को दूध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया, जिससे हम अंततः विश्व चैम्पियन भी बने। इस अवसर पर पूरा देश सतत् दूध उत्पादन, प्रगतिशील डेरी सेक्टर और इसमें करोड़ों डेरी किसानों के योगदान की सराहना करता है। डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों को बधाई और शुभकामनाएं देता है। इसी क्रम में डेरी सेक्टर की सबसे बड़ी और लोकप्रिय गैर–सरकारी संस्था इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) ने अपने नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन किया। यह आयोजन आईडीए–नॉर्थ ज़ोन ने आईडीए–वेस्टर्न यूपी लोकल चैप्टर के सहयोग से संपन्न किया।

आईडीए के अध्यक्ष (निर्वाचित) श्री सुधीर कुमार सिंह ने अपने स्वागत भाषण में सभी माननीय अतिथियों, डेरी विशेषज्ञों और प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। अपने भाषण में उन्होंने डॉ. वर्गीज़ कुरियन के साथ काम करने के अपने निजी अनुभवों को साझा कीया। डॉ. कुरियन ने डेरी संस्थानों की कार्यप्रणाली में कभी भी किसी बाह्य हस्तक्षेप को अनुमति नहीं दी। डॉ. कुरियन एक भविष्यद्रष्टा नेता थे, जिन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया, और कहा कि अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करना चाहिए। साथ ही भ्रष्टाचार के प्रति 'ज़ीरो टॉलरेंस' की नीति अपनानी चाहिए। डॉ. कुरियन की नीतियों ने बिहार में डेरी सेक्टर के अद्वितीय विकास में केंद्रीय भूमिका अदा की। आज हमारे यहां 22 दुग्ध महासंघ, 241 जिला सहकारी दुग्ध संघ, 25 दुग्ध उत्पादक संगठन (एमपीओ), 2.35 लाख ग्राम दुग्ध सहकारी समितियां और 1.72 करोड़ सदस्य डेरी किसान सक्रियता

माननीय अतिथि डॉ. हरसेव सिंह का स्वागत

से कार्यरत हैं। देश भर में 48,000 से अधिक महिला नेतृत्व वाली डेरी सहकारी समितियां ग्रामीण स्तर पर संचालित की जा रही हैं। आईडीए अध्यक्ष (निर्वाचित) ने बताया कि जब उन्होंने पटना डेरी में अपने व्यावसायिक जीवन की शुरूआत की तो इसकी दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता मात्र 500 लीटर प्रतिदिन थी, और जब उन्होंने यहां सेवा समाप्त की तो इसकी क्षमता सैकड़ों गुनी बढ़कर छह लाख लीटर प्रतिदिन हो गई थी।

श्री सुधीर कुमार सिंह ने अपने संबोधन में आगे बताया कि वर्तमान में भारत द्वारा विश्व के दुग्ध उत्पादन में लगभग 25 प्रतिशत का योगदान दिया जा रहा है। हम यह कीर्तिमान डॉ. कुरियन की नीतियों के कारण हासिल कर पायें। आने वाले समय में हमें प्रति पशु दूध उत्पादन बढाने की आवश्यकता है। यदि प्रति पशु उत्पादन को दुगुना कर दिया जाए तो हमारे पास दूध के अतिरिक्त उत्पादन का भंडार हो जाएगा। श्री सिंह ने जोर देकर कहा कि हमें डेरी सेक्टर को युवा पीढ़ी के लिए आकर्षक बनाना होगा, यह डेरी सेक्टर के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। नवाचारी विचारों पर आधारित अनेक डेरी स्टार्टअप्स का विकास हुआ है, जो उन्नत प्रौद्योगिकी और पूर्ण–स्वचालन का उपयोग करते हैं। किसानों तक अधिकतम लाभ पहुंचाने के लिए दुग्ध उत्पादन की लागत को कम करने के प्रयास करने होंगे। श्री सुधीर सिंह ने कहा कि आईवीएफ की कीमत भी सार्थक रूप से कम करने की आवश्यकता है, क्योंकि बहुत–से डेरी किसान ऊंची लागत के कारण इस उपयोगी तकनीक को नहीं अपना पाते। उन्होंने श्वेत क्रांति 2.0 का उल्लेख करते हुए बताया कि इसकी शुरूआत वर्ष 2024 से हो चुकी है, और आशा है कि नस्ल सुधार कार्यक्रम के माध्यम से प्रति पशु दूध उत्पादन को बढ़ाया जा सकेगा। इससे जल्दी ही प्रसंस्करण क्षमता में भी वृद्धि होगी, और डेरी संयंत्रों तथा मार्केटिंग में निरंतर मांग बढ़ने से रोजगार के नये अवसरों को बढ़ावा मिलेगा। इन सभी पहलों और विकास के कारण अगले 2–3 वर्षों में दूध उत्पादन में सार्थक वृद्धि की संभावना है। डेरी सेक्टर का विकास बड़ी तेजी से गति पकड़ रहा है।

आनंदा डेरी के अध्यक्ष डॉ. राधे श्याम दीक्षित ने माननीय अतिथि के रूप में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि एफएसएसएआई (फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया) ने अनेक डेरी ऐनालॉग्स को मान्यता दी है। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी में डेरी उद्योग के प्रति कोई रूचि नहीं है। हमें आज छोटे मवेशी फार्मों की आवश्यकता है। उन्नत गुणवत्ता वाले जर्मप्लाज़्म का उपयोग करके भ्रूण स्थानांतरण और कृत्रिम गर्भाधान को अनिवार्य रूप से अपनाना चाहिए। उन्होंने आईडीए से आग्रह किया कि आनुवंशिक सुधार की नीति के विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी डेरी सेक्टर के विकास में सहायक होगी। डॉ. दीक्षित ने पशु आहार और चारे की कमी को बड़ी चुनौती मानते हुए जोर दिया कि इनके उचित प्रबंधन और सतत् विकास की व्यवस्था करनी चाहिए। आबादी बढ़ रही है, परंतु भूमि का क्षेत्र निश्चित है, इसलिए इस ओर एक सशक्त रणनीति बनाकर काम करना होगा। ऐसी

नीतियां बनानी होंगी, जो डेरी सेक्टर के सतत् विकास को सुनिश्चित कर सकें।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–केंद्रीय मवेशी अनुसंधान संस्थान, मेरठ के इंचार्ज निदेशक डॉ. एस. के सिंह ने आयोजन के माननीय अतिथि के रूप में अपने संभाषण में डॉ. कुरियन के योगदानों का स्मरण किया और सराहना की। उन्होंने कहा कि डॉ. कुरियन ने देश को दूध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने और पोषण सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और रोजगार के अवसर सृजित करने में भी उनकी अहम् भूमिका रही। डॉ. सिंह ने बताया कि दूध उत्पादन की लागत 80 रूपये प्रति लीटर तक पहुंच गई है, इस दशा में उनको दूध की कीमत भी अच्छी मिलनी चाहिए, ताकि सतत् दूध उत्पादन जारी रहे। उन्होंने डेरी पशुओं के आनुवंशिक सुधार की आवश्यकता पर भी जोर दिया और कहा कि इसके लिए सरकार और निजी क्षेत्रों को आपस में सहयोग द्वारा योगदान करना चाहिए। डॉ. सिंह ने डेरी सेक्टर में व्यर्थ के समुचित निपटान और सदुपयोग पर भी

माननीय अतिथि डॉ. राघे श्याम दीक्षित का स्वागत

बल दिया। उन्होंने कहा कि सेक्स–चयनित वीर्य, आईवीएफ और कृत्रिम गर्भाधान जैसी आधुनिक तकनीकें प्रत्येक पशु के लिए उपयुक्त नहीं हैं, इनका उपयोग पशु की उपयुक्तता के आधार पर करना चाहिए।

'सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया' के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. हरसेव सिंह ने माननीय अतिथि के रूप में अपने संभाषण में डॉ. कुरियन के विचारों को साझा किया। उन्होंने बताया कि डॉ. कुरियन डेरी किसानों को विश्व के सबस बुद्धिमान सर्जक मानते थे। उनका मानना था कि डेरी सेक्टर में कार्यरत सभी कार्मिक मूल रूप से डेरी किसानों के कर्मचारी हैं। डॉ. सिंह ने दूध के संग्रह, प्रसंस्करण, गुणवत्ता और मार्केटिंग से जुड़े अनेक पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि यदि हम डेरी सेक्टर में कीमतों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना चाहते हैं, तो हमें प्रौद्योगिकी अपनाने पर जोर देना होगा, और इसे बढ़ावा देना होगा। उन्होंने देश में कुशल कामगारों की कमी पर चिंता प्रकट की।

आईडीए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जी. एस. राजौरिया ने अपने संबोधन में पनीर में मिलावट के बढ़ते मामलों पर चिंता व्यक्त की। लिंग–चयनित वीर्य तकनीक पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा इसे अधिक प्रभावी और विस्तारित करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पशुओं के लिए चारे और आहार की कीमत में कमी लाकर प्रति पशु उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है। मिलावट, 'वीगन डाइट' और वनस्पति आधारित पेय की चुनौतियों से निपटने के लिए आईडीए को अपनी एक कोर कमेटी का गठन करना चाहिए, जो इस संबंध में जन–जागरूकता का प्रसार करे और इसे सशक्त करे। इसके लिए नियमित रूप से प्रेस वार्ताओं, सम्मेलनों, औद्योगिक जागरूकता कार्यक्रमों, और संबंधित विभागों के साथ संपर्क कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। संबंधित प्रचार के साथ प्रामाणिक वैज्ञानिक निबंधों का प्रकाशन भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी प्रमुख नीति–निर्धारक मंचों पर आईडीए के सदस्यों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए। डॉ. राजौरिया ने एक प्रमुख सलाह देते हुए कहा कि दूध उत्पादन की लागत को उपयुक्त बनाना और कम करना हमारे लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण है। वर्तमान में न्यूजीलैंड में दूध उत्पादन की

माननीय अतिथि डॉ. एस. के. सिंह का स्वागत

लागत सबसे कम है, जबकि पहले यह स्थान भारत को प्राप्त था। इसके अलावा डेरी उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए भी दूध उत्पादन की लागत को प्रतिस्पर्धी बनाना आवश्यक है।

सीआईआरसी, मेरठ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस. के. वर्मा ने अपने संबोधन में डेरी पशुओं में संकरण यानी 'क्रॉस ब्रीडिंग' पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पहले के समय में संकरण आवश्यक था, साथ ही उन्होंने बताया कि संकरित पशु से प्राप्त दूध गुणवत्ता में निम्न स्तर का नही होता। डॉ. वर्मा ने सोशल मीडिया पर घी की गुणवत्ता को लेकर दी जा रही गलत जानकारी पर चिंता प्रकट की और कहा कि इस प्रकार की चुनौतियों से निपटने के लिए हमें पॉडकास्ट जैसे विकल्पों को आजमाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कुछ दूध उत्पादक गैर–यूरिया आधारित दूध की बात करते हैं, परंतु पशुओं को यूरिया युक्त आहार/चारा एक सीमा तक खिलाने से दूध की गुणवत्ता पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। उन्होंने सलाह दी कि किसानों को अपनी भूमि के कम से कम 10 प्रतिशत भाग पर चारे का उत्पादन करना चाहिए, ताकि वे अपने पशुओं की चारा आवश्यकता को स्वयं पूरा कर सकें। डॉ. वर्मा ने कहा कि डेरी से संबंधित महासंघों और संघों को महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी पूर्ण विडियो प्रसारित करने चाहिए। उन्होंने एक महत्वपूर्ण जानकारी पूर्ण देते हुए कहा कि आईसीएआर–सीआईआरसी द्वारा एससी/एसटी वर्ग के डेरी किसानों को हिमीकृत वीर्य निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

परम डेरी के निदेशक श्री रजत अग्रवाल ने डॉ. कुरियन के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने दूध की कीमत उसमें मौजूद वसा अंश के आधार पर की, ना कि पशु की किसी जाति या नस्ल के आधार पर।

भारत सरकार के डेरी विभाग के पूर्व सहायक आयुक्त श्री आई.के.नारंग ने 1964 में बेंगलुरू में आयोजित पहली डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस में डॉ. कुरियन से अपनी पहली मुलाकात की स्मृतियों को साझा किया। उन्होंने डॉ. कुरियन को एक निडर, समर्पित और प्रतिबद्ध व्यक्तित्व का नायक बताया। श्री नारंग ने अपने संबोधन में डॉ. कुरियन के उस समय के शब्दों को दोहराया, ''सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले आप लोगों ने किसानों के लिए क्या किया है ? केवल अमूल है, जिसने किया है.... अमूल किसानों के द्वारा और किसानों के लिए है।"

आयोजन में आईडीए की कार्यकारिणी के पदाधिकारी और सदस्य, आईडीए के विभिन्न राज्य चैप्टर्स और लोकल चैप्टर्स के पदाधिकारी व सदस्य, तथा अनेक डेरी संस्थानों व संगठनों के प्रतिनिधियों और कर्मचारियों ने भागीदारी की। कार्यक्रम का समापन आईडीए के महासचिव श्री हरिओम गुलाटी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ। ■

समारोह–सम्मान

भारत सरकार के पशुपालन और डेरी विभाग का राष्ट्रीय दुग्ध दिवस समारोह

भारत सरकार के मत्स्य पालन, पशुपालन और डेरी मंत्रालय के पशुपालन और डेरी विभाग (डीएएचडी) ने 26 नवंबर, 2025 को नई दिल्ली के सुषमा स्वराज भवन में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाया।

इस कार्यक्रम में मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेरी राज्य मंत्री प्रो. एस.पी.सिंह बघेल और श्री जॉर्ज कुरियन, पशुपालन एवं डेरी विभाग में सचिव श्री नरेश पाल गंगवार तथा पशुपालन एवं डेरी विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में देश भर के पशुपालकों, दुग्ध संघों, डेरी सहकारी समितियों और विशेषज्ञों ने भी भाग लिया।

पशुपालन एवं डेरी विभाग की अपर सचिव सुश्री वर्षा जोशी ने स्वागत भाषण दिया तथा गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों की उपस्थिति का आभार व्यक्त किया।

पशुपालन एवं डेरी विभाग के सचिव श्री नरेश पाल गंगवार ने राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर सभी प्रतिभागियों और पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने पशुधन क्षेत्र में दीर्घकालिक विकास प्राप्त करने में आनुवंशिक सुधार और उन्नत प्रजनन तकनीकों जैसे वैज्ञानिक कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने डेरी किसानों को सेक्स सॉर्टेड सीमन, इन–विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने डेरी किसानों के आर्थिक उत्थान में डेरी सहकारी समितियों के सहयोग पर भी प्रकाश डाला।

समारोह के दौरान, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेरी राज्य मंत्री प्रो. एस.पी.सिंह बघेल ने स्वदेशी गाय/भैंस नस्लों का पालन करने वाले सर्वश्रेष्ठ डेरी किसान, सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन और सर्वश्रेष्ठ डेरी सहकारी समिति (डीसीएस)/दूध उत्पादक कंपनी/डेरी किसान उत्पादक संगठन जैसे तीन श्रेणियों में विजेताओं को राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार प्रदान किए।

प्रो. एस.पी.सिंह बघेल ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में डेरी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि सरकार के प्रयासों से देश में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और यह 485 ग्राम प्रतिदिन तक पहुंच गई है, जो वैश्विक औसत 329 ग्राम प्रतिदिन से कहीं अधिक है। उन्होंने डेयरी किसानों का भी उत्साहवर्धन किया और कहा कि राष्ट्र की शक्ति गांवों में निहित है। उन्होंने अपने भाषण में राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार विजेताओं की भी सराहना की और डेरी क्षेत्र की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

केन्द्रीय मंत्री ने देश में पशु चिकित्सा अवसंरचना के न्यूनतम मानकों हेतु दिशानिर्देश भी जारी किए। ये दिशानिर्देश पशु चिकित्सा सेवा वितरण के लिए एक समान चार–स्तरीय संरचना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, जिसमें प्राथमिक पशु चिकित्सा देखभाल केंद्र (पीवीसीसी), ब्लॉक–स्तरीय पशु चिकित्सा अस्पताल, जिला–स्तरीय पशु चिकित्सा

अस्पताल और राज्य–स्तरीय पॉलीक्लिनिक/रेफरल केंद्र शामिल हैं। ये दिशानिर्देश राज्यों को पशु चिकित्सा सेवा वितरण को बेहतर बनाने में सहायता करेंगे।

श्री बघेल ने बुनियादी पशुपालन सांख्यिकी (बीएएचएस) 2025 का शुभारंभ भी किया, जो नीति नियोजन के लिए अद्यतन और व्यापक डेटा प्रदान करता है।

श्री एस.पी. सिंह बघेल ने राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम (एनपीडीडी) के अंतर्गत रोपड़ मिल्क यूनियन के 20 आधुनिक इंसुलेटेड दूध टैंकरों को झंडी दिखाकर रवाना किया, जो जेआईसीए (जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी) से सहायता प्राप्त परियोजना–घटक बी: सहकारिता के जरिए डेरी से समर्थित है। इस कार्यक्रम में राज्यों में नौ नस्ल गुणन फार्मों का उद्घाटन भी किया गया।

कार्यक्रम के दौरान, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेरी राज्य मंत्री ने न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को बनाए रखने के लिए उपस्थित सभी प्रतिभागियों के साथ भारत के संविधान की प्रस्तावना भी पढ़ी।

मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेरी राज्य मंत्री श्री जॉर्ज कुरियन ने राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार 2025 के सभी विजेताओं को बधाई दी और डेरी उत्पादकता में सुधार के लिए कृत्रिम गर्भाधान तथा भ्रूण स्थानांतरण जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाने की सराहना की। उन्होंने देश के पशुधन क्षेत्र में विकास को गति देने के लिए उपलब्ध पशु चिकित्सा सेवाओं को और सुदृढ़ करने तथा नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कार्यक्रम में "पशु उत्पादकता में वृद्धि – तकनीकी विशेषज्ञों और प्रगतिशील किसानों के साथ अनुभव साझा करना" विषय पर विचारोत्तेजक पैनल चर्चा भी हुई। यहां विशेषज्ञों और प्रगतिशील किसानों ने अपनी समझ, व्यावहारिक अनुभव, नए नवाचारों, नवीनतम वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने और क्षेत्र स्तर की रणनीतियों को साझा किया, जिससे पशु उत्पादन में सार्थक सुधार हुआ है।

यह कार्यक्रम पशुधन और डेरी क्षेत्र से जुड़े किसानों की उपलब्धियों को सम्मानित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

विभिन्न श्रेणियों में राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार, 2025 विजेताओं का विवरण

क्र.सं.	वर्ग	राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार 2025 के विजेताओं के नाम और स्थान
1.	देशी गाय–भैंस नस्लों का पालन करने वाले सर्वश्रेष्ठ डेरी किसान	**गैर–पूर्वोत्तरः** प्रथम–श्री अरविन्द यशवन्त पाटिल, कोल्हापुर, महाराष्ट्र द्वितीय–डॉ. कंकनाला कृष्ण रेड्डी, हैदराबाद, तेलंगाना तृतीय–श्री हर्षित झूरिया, सीकर, राजस्थान तृतीय–कुमारी श्रद्धा सत्यवान धवन, अहमदनगर, महाराष्ट्र **पूर्वोत्तर / हिमालयीः** • श्रीमती विजय लता, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश • श्री प्रदीप पंगरिया, चंपावत, उत्तराखंड
2.	सर्वश्रेष्ठ डेयरी सहकारी समिति दूध उत्पादक कंपनी / डेरी किसान उत्पादक संगठन	**गैर–पूर्वोत्तरः** प्रथम–मीनन गाडी क्षीरोलपदका सहकारण संघम लिमिटेड, वायनाड, केरल द्वितीय–कुन्नमकट्टुपति क्षीरोलपादक सहकारण संघम, पलक्कड़, केरल द्वितीय–घिनोई दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति, जयपुर, राजस्थान तृतीय–टीवाईएसपीएल 37 सेंदुरई मिल्क प्रोड्यूसर्स कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, अरियालुर, तमिलनाडु **पूर्वोत्तर / हिमालयीः** • कुल्हा दूध उत्पादक सहकारी समिति, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड
3.	सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (एआईटी)	**गैर–पूर्वोत्तरः** प्रथम–श्री दिलीप कुमार प्रधान, अनुगुल, ओडिशा द्वितीय–श्री विकास कुमार, हनुमानगढ़, राजस्थान तृतीय–श्रीमती अनुराधा चकली, नंद्याल, आंध्र प्रदेश **एनईआर / हिमालयनः** • श्री डेलुवर हसन, बारपेटा, असम

नोटः राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार–2025 में प्रथम दो श्रेणियों अर्थात सर्वश्रेष्ठ डेयरी किसान और सर्वश्रेष्ठ किसान और डेयरी सहकारी दूध उत्पादक कंपनी–डेयरी किसान उत्पादक में योग्यता प्रमाण पत्र, एक स्मृति चिन्ह और मौद्रिक पुरस्कार शामिल होंगेः

रु. 5,00,000 / – (केवल पांच लाख रुपये) – प्रथम स्थान

रु. 3,00,000 / – (केवल तीन लाख रुपये) – दूतीय स्थान

रु. 2,00,000 / – (केवल दो लाख रुपये) – तृतीय स्थान

रु. 2,00,000 / – (केवल दो लाख रुपये)– पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर)–हिमालयी राज्यों के लिए विशेष पुरस्कार।

सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (एआईटी) श्रेणी के मामले में, राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार–2025 में केवल योग्यता प्रमाण पत्र और एक स्मृति चिन्ह प्रदान किया जाएगा। कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (एआईटी) श्रेणी में कोई नकद पुरस्कार नहीं दिया जाएगा। ■

(साभारः पीआईबी)

कीर्तिमान

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर श्वेत क्रांति का सम्मान

प्रेस इंफार्मेशन ब्यूरो, भारत सरकार

प्रमुख बिंदु

- भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक है, जिसका उत्पादन बढ़कर 239.30 मिलियन टन हो गया है और 2026 में 242 मिलियन टन तक पहुँचने का अनुमान है, जो वैश्विक आपूर्ति में 32 प्रतिशत का योगदान देगा।
- अमूल वैश्विक सहकारी रैंकिंग में शीर्ष पर है और इसने 2024–25 में ₹90,000 करोड़ से अधिक का कारोबार दर्ज किया है।
- राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम (एनपीडीडी) ने 31,000 से अधिक डेयरी सहकारी समितियों को पुनर्जीवित किया है और दूध शीतलन तथा गुणवत्ता परीक्षण बुनियादी ढांचे को मजबूत किया है।
- श्वेत क्रांति 2.0 का लक्ष्य 75,000 नई डेयरी सहकारी समितियाँ बनाना और 2028–29 तक खरीद और प्रसंस्करण क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना है।
- 2025 में हुए जीएसटी सुधारों ने अधिकांश डेयरी उत्पादों पर कर घटाकर शून्य या 5 प्रतिशत कर दिया है।

परिचय

भारत के पोषण परिदृश्य में दूध केंद्रीय स्थान रखता है, जो उच्च गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन और कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे आवश्यक पोषक तत्वों को आसानी से अवशोषित होने वाले रूपों में प्रदान करता है। अकसर एक लगभग संपूर्ण आहार माना जाने वाला दूध, सभी आयु समूहों में वृद्धि, हड्डियों के स्वास्थ्य और जीवन शक्ति का समर्थन करता है।

भारत लगातार दुनिया के अग्रणी दूध उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति बनाए हुए है, जो वैश्विक उत्पादन में लगभग एक–चौथाई का योगदान करता है। पिछले 11 वर्षों में, भारत के डेरी क्षेत्र में 70 प्रतिशत की महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में लगभग 5 प्रतिशत का योगदान देता है और आठ करोड़ से अधिक किसानों को सीधा रोजगार प्रदान करता है (राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के अनुसार)। इसके अलावा, महिला किसान उत्पादन और संग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे डेरी समावेशी और लिंग–उत्तरदायी विकास के लिए एक मजबूत माध्यम बन जाता है।

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस हर साल 26 नवंबर को डॉ. वर्गीज़ कुरियन की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिन्हें भारत में श्वेत क्रांति का जनक माना जाता है। यह दिन उन लाखों किसानों को सम्मानित करता है, जिनकी प्रतिबद्धता दूध उत्पादन में देश के नेतृत्व को बनाए रखती है, और एक लचीले, समावेशी और पोषण की दृष्टि से सुरक्षित भविष्य की ओर इसकी यात्रा को मजबूत करती है।

भारत के डेरी क्षेत्र का ऐतिहासिक मार्ग

वर्ष 1950 और 1960 के दशक के दौरान भारत में दूध की कमी थी और यह आयात पर निर्भर था। स्वतंत्रता के बाद के पहले दशक में, दूध उत्पादन की सीएजीआर 1.64% दर्ज की गई थी, जो 1960 के दशक के दौरान गिरकर 1.15% हो गई थी। यह तब था, जब देश में दुनिया की सबसे बड़ी पशु आबादी मौजूद थी।

भारत में आधुनिक डेरी आंदोलन आनंद सहकारी मॉडल की सफलता पर आधारित था, जो सरदार वल्लभभाई पटेल,

डेरी विकास में महिलाओं का श्रेष्ठ योगदान

महात्मा गांधी और त्रिभुवनदास पटेल जैसे नेताओं के मार्गदर्शन में फला–फूला। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) की स्थापना 1965 में की गई और डॉ. कुरियन को इसका पहला अध्यक्ष नियुक्त किया गया। बोर्ड का मिशन आनंद सहकारी मॉडल को पूरे भारत में दोहराना और किसानों को मजबूत, ग्राम–स्तरीय दुग्ध उत्पादक समितियों में संगठित करना था।

अमूल के अग्रदूत, खेड़ा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ की उपलब्धियों पर आधारित होकर, एनडीडीबी ने वर्ष 1970 में ऑपरेशन फ्लड की शुरुआत की। इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण दूध उत्पादन को बढ़ाना और एक सुव्यवस्थित प्रणाली विकसित करना था, जिसने दूध–समृद्ध क्षेत्रों में सहकारी समितियों को प्रमुख शहरी बाजारों में कुशलतापूर्वक दूध की आपूर्ति करने में सक्षम बनाया।

इस पहल ने भारत को दूध की कमी वाले राष्ट्र से दुनिया के सबसे बड़े दूध उत्पादक में बदल दिया। डेयरी विकास में इसके महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रभाव और योगदान को पहचानते हुए, एनडीडीबी को 1987 में संसद के एक अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में नामित किया गया था।

भारत की दुग्ध अर्थव्यवस्था में परिवर्तनः प्रगति का एक दशक

पिछले एक दशक में, भारत के डेरी क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। दूध उत्पादन 2014–15 में 146.30 मिलियन टन से बढ़कर 2023–24 में 239.30 मिलियन टन हो गया है, जो 63.56 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता भी 124 ग्राम से बढ़कर 471 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन हो गई है।

भारत की डेरी अर्थव्यवस्था गाय, भैंस, मिथुन और याक सहित 303.76 मिलियन मवेशियों पर टिकी हुई है। वर्ष 2014 और 2022 के बीच, मवेशियों की उत्पादकता (किलोग्राम/वर्ष) में 27.39 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो विश्व स्तर पर सबसे अधिक वृद्धि है, और वैश्विक औसत 13.97 प्रतिशत से काफी ऊपर है।

भेड़ (74.26 मिलियन) और बकरियाँ (148.88 मिलियन) महत्वपूर्ण योगदान देना जारी रखती हैं, खासकर शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में, जहाँ वे दूध उत्पादन का समर्थन करती हैं। दुधारू पशुओं की संख्या 86 मिलियन से बढ़कर 112 मिलियन हो गई है, जबकि स्वदेशी गाय नस्लों से दूध का उत्पादन 29 मिलियन टन से बढ़कर 50 मिलियन टन हो गया है।

यह सफलता राष्ट्रीय गोकुल मिशन और पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एलएचडीसीपी) जैसी पहलों से प्रेरित है, जो प्रजनन को बढ़ाने, आनुवंशिक गुणवत्ता में सुधार करने और पशु स्वास्थ्य को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसके अतिरिक्त, आयुर्वेद के साथ एथनोवेटेरिनरी मेडिसिन (ईवीएम) का एकीकरण (समावेशन) एंटीबायोटिक दवाओं के टिकाऊ, कम लागत वाले विकल्प प्रदान करता है, जिससे पशुधन के समग्र स्वास्थ्य और लचीलेपन में वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत प्रगति

पशुपालन और डेरी विभाग वर्ष 2014 से राष्ट्रीय गोकुल मिशन को लागू कर रहा है, जिसका उद्देश्य स्वदेशी मवेशियों और भैंसों की नस्लों का संरक्षण और विकास करना, मवेशियों की आनुवंशिक क्षमता में सुधार करना तथा दूध उत्पादन और समग्र उत्पादकता को बढ़ाना है।

मार्च 2025 में, पशुधन क्षेत्र के विकास में तेजी लाने के लिए इस मिशन को संशोधित किया गया था। अब यह विकास कार्यक्रम योजना के एक केंद्रीय क्षेत्र के घटक के रूप में कार्य करता है, जिसमें ₹1,000 करोड़ का अतिरिक्त आवंटन किया गया है, जिससे 15वें वित्त आयोग चक्र (2021 से 2026) की अवधि के लिए कुल परिव्यय ₹3,400 करोड़ हो गया है।

संशोधित मिशन पिछली गतिविधियों पर आधारित है, जबकि वीर्य स्टेशनों को मजबूत करने, कृत्रिम गर्भाधान नेटवर्क का विस्तार करने, और लिंग–चयनित वीर्य और त्वरित सुधार कार्यक्रमों के माध्यम से वैज्ञानिक प्रजनन को बढ़ावा देने पर अधिक जोर देता है। राष्ट्रीय गोकुल मिशन के माध्यम से, भारत स्वदेशी मवेशी नस्लों का संरक्षण कर रहा है और आनुवंशिक विविधता में सुधार कर रहा है। अब तक, 56 मिलियन से अधिक किसानों का समर्थन करते हुए, 92 मिलियन से अधिक पशुओं को लाभ पहुँचाया गया है।

कृत्रिम गर्भाधानः कृत्रिम गर्भाधान दुधारू पशुओं की दूध की पैदावार और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सबसे प्रभावी साधनों में से एक बना हुआ है। वर्तमान में, भारत में प्रजनन योग्य दुधारू पशुओं में से लगभग 33 प्रतिशत को इस विधि के माध्यम से कवर किया जाता है, जबकि 70 प्रतिशत पशुओं को

(शेष पृष्ठ 24 पर)

Safal
Frozen
Green Peas
MOTHER DAIRY
CHEESE SLICES
add some magic with our slices
10 slices
FRUIT YOGHURT
BLUEBERRY
MOTHER DAIRY
ULTIMATE
dahi
RICH & DELICIOUS
MOTHER DAIRY
Mishti Doi
FLAVOURED DAIRY IMAGE FROM PASTEURISED FULL CREAM MILK
MOTHER DAIRY
CLASSIC
dahi
SIMPLY DELICIOUS
MOTHER DAIRY
MILK SHAKE
MOTHER DAIRY
Ultimate
STRAWBERRY CRUSH
4% Fat
MOTHER DAIRY
Cow milk
CHILLZ
Choco Bliss

MOTHER DAIRY®

Serving Generations with Tradition of Goodness

Images are for visual depiction only.

Toll Free No. 1800-1801-018

नवंबर 2025

पशुपालन

पशुपालकों के लिए

(सौजन्यः

- खुरपका–मुंहपका रोग का टीका बाकी बचे पशुओं को लगवाएं।
- अंतः कृमि नाशक दवा का सेवन अवश्य कराएं।
- पशुओं को संतुलित आहार दें।
- बरसीम तथा जई अवश्य बोएं।
- 50 ग्राम खनिज मिश्रण एवं 50 ग्राम नमक प्रत्येक पशु को खिलाएं।
- थनैला रोग होने पर पशुचिकित्सक से समुचित उपचार कराएं।
- बहुवर्षीय घासों की कटाई करें, इसके बाद यह सुषुप्त अवस्था में चली जाती हैं, जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी–मार्च में ही प्राप्त होती है।
- पशुओं को ठंड से बचाने के लिए समुचित उपाय करें और विशेष खान–पान उपलब्ध कराएं।

कैलेंडर 2025

उपयोगी मासिक जानकारी

ईपशुपालन डॉट कॉम)

दिसंबर 2025

- पशुओं का ठंडक से बचाव जारी रखें परंतु झूल डालने के पश्चात् आग से दूर रखें।
- पशु तथा नवजात बच्चों को अंतः कृमि नाशक दवा अवश्य पिलाएं।
- बाकी बचे पशुओं में खुरपका–मुंहपका रोग का टीका अवश्य लगवाएं।
- सूकरो में स्वाइन फीवर का टीका अवश्य लगवाएं।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकालें और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणुनाशक घोल से धो लें।
- यदि इस समय वातावरण में बादल नहीं हैं और पशुओं को खिलाने के लिए अतिरिक्त हरा चारा बचा हुआ है, तो उसे छाया में सुखाकर "हे" के रूप में संरक्षित कर लें।
- बुआई के 50 से 55 दिन बाद बरसीम एवं 55 से 60 दिन बाद जई के चारे की कटाई करें।

(पृष्ठ 19 का शेष)

अभी भी अज्ञात आनुवंशिक योग्यता वाले सामान्य सांडों द्वारा गर्भाधान कराया जाता है। वर्ष 2024–25 में, देश भर में कुल 565.55 लाख कृत्रिम गर्भाधान किए गए, जो वैज्ञानिक प्रजनन पद्धतियों के विस्तार में एक महत्वपूर्ण वृद्धि है।

श्वेत क्रांति

राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम (एनएआईपी): राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम के तहत किसानों के द्वार पर मुफ्त गर्भाधान सेवाएं प्रदान की जाती हैं। अगस्त 2025 तक, इस कार्यक्रम ने 9.16 करोड़ पशुओं तक पहुँच बनाई है और 14.12 करोड़ गर्भाधान किए हैं, जिससे 5.5 करोड़ से अधिक किसानों को लाभ हुआ है। उन्नत प्रजनन कार्यों का समर्थन करने के लिए 22 आईवीएफ प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं, और 10 मिलियन से अधिक सेक्स सॉर्टेड वीर्य की खुराकें उत्पादित की गई हैं, जिनमें से 70 लाख खुराकें पहले ही उपयोग की जा चुकी हैं। इसने किसानों को मादा बछड़ों का अधिक अनुपात प्राप्त करने और भविष्य के दूध उत्पादन को मजबूत करने में मदद की है।

मैत्रीः ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजनन सेवाओं को करीब लाने के लिए, प्रशिक्षित मल्टीपर्पज एआई टेक्नीशियंस, जिन्हें मैत्री के नाम से जाना जाता है, को तैनात किया गया है। ये तकनीशियन तीन महीने का प्रशिक्षण लेते हैं और आवश्यक उपकरणों के लिए ₹50,000 तक का अनुदान प्राप्त करते हैं, और अंततः सेवा राजस्व के माध्यम से आत्मनिर्भर बन जाते हैं। पिछले चार वर्षों में, 38,736 मैत्री को शामिल किया गया है और वे घर–घर पशु चिकित्सा और प्रजनन सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संतति परीक्षणः सांडों का वैज्ञानिक मूल्यांकन संतति परीक्षण के माध्यम से किया जाता है, जो उनकी बेटियों के प्रदर्शन के आधार पर उनके आनुवंशिक मूल्य का आकलन करता है। वर्ष 2021 और 2024 के बीच, 4,111 के लक्ष्य के मुकाबले 3,747 संतति–परीक्षणित सांडों का उत्पादन किया गया, और किसानों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले दुधारू पशुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 132 नस्ल गुणन फार्मों को मंजूरी दी गई है।

राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम के तहत प्रगति (एनपीडीडी)

वर्ष 2014–2015 से, दूध और दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने, साथ ही खरीद, प्रसंस्करण और विपणन के लिए संगठित प्रणालियों का विस्तार करने हेतु राष्ट्रव्यापी स्तर पर राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस योजना ने सहकारी संघों, यूनियनों और उत्पादक कंपनियों से जुड़े उत्पादकों का समर्थन करने वाले बुनियादी ढांचे के निर्माण और मजबूती में मदद की है।

जुलाई 2021 में इस योजना को पुनर्गठित/पुनर्संरेखित किया गया है, जिसका कार्यान्वयन 2021–22 से 2025–26 तक निम्नलिखित दो घटकों के साथ किया जा रहा हैः

एनपीडीडी के घटक–ए को राज्य सहकारी डेयरी संघों/जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघों/एसएचजी/दुग्ध उत्पादक कंपनियों/किसान उत्पादक संगठनों के लिए बुनियादी ढांचे की स्थापना या उन्नयन, गुणवत्तापूर्ण दूध परीक्षण उपकरण के साथ ही प्राथमिक शीतलन सुविधाओं को स्थापित करने के लिए डिजाइन किया गया है।

एनपीडीडी योजना के घटक 'बी', जिसे 'सहकारिता के माध्यम से डेयरी' कहा जाता है, का उद्देश्य किसानों की संगठित बाजारों तक पहुँच बढ़ाना, आधुनिक डेयरी प्रसंस्करण सुविधाओं और विपणन बुनियादी ढांचे को आधुनिक बनाना और उत्पादक–स्वामित्व वाले संस्थानों की क्षमता को मजबूत करके दूध और डेरी उत्पादों की बिक्री में वृद्धि करना है।

सहकारी डेरी नेटवर्क

समय के साथ, 31,908 डेयरी सहकारी समितियों का गठन या पुनरुद्धार किया गया है, जिससे 17.63 लाख नए दुग्ध उत्पादक जुड़े हैं और दैनिक दूध खरीद में 120.68 लाख किलोग्राम की वृद्धि हुई है। कार्यक्रम के परिणामस्वरूप 61,677 ग्राम दुग्ध परीक्षण प्रयोगशालाओं की स्थापना हुई है, लगभग 6,000 बड़े दुग्ध कूलर स्थापित किए गए हैं जिनकी कुल शीतलन क्षमता 149.35 लाख लीटर है, और उन्नत मिलावट पहचान तकनीकों के साथ 279 डेरी संयंत्र प्रयोगशालाओं का उन्नयन किया गया है। राज्य की रिपोर्ट के अनुसार, चालू वर्ष के दौरान 1,804 नई डेरी सहकारी समितियाँ पहले ही बनाई जा चुकी हैं, जिससे 37,793 दुग्ध उत्पादकों के लिए अवसर पैदा हुए हैं।

अक्टूबर 2025 में इस पहल के तहत कई प्रमुख बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं का उद्घाटन भी किया गया था। इनमें मेहसाणा, इंदौर और भीलवाड़ा में नए दुग्ध पाउडर और यूएचटी (अल्ट्रा–हाई टेम्परेचर) संयंत्र, साथ ही तेलंगाना के करीमनगर में एक ग्रीनफील्ड डेरी प्लांट शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में ₹219 करोड़ के कुल निवेश के साथ एक एकीकृत डेरी प्लांट और पशु आहार इकाई के लिए नींव का काम शुरू हो गया है। भारत के सहकारी डेरी क्षेत्र में 22 दुग्ध महासंघ, 241 जिला यूनियन, 28 विपणन डेयरियाँ, और 25 दुग्ध उत्पादक संगठन (एमपीओ) शामिल हैं। वे मिलकर 2.35 लाख गाँवों को सेवा प्रदान करते हैं और 1.72 करोड़ डेरी किसानों को जोड़ते हैं, जिससे उचित मूल्य और कुशल दूध प्रसंस्करण सुनिश्चित होता है।

महिलाएँ इस इकोसिस्टम के केंद्र में बनी हुई हैं, जिनमें डेरी कार्यबल का लगभग 70 प्रतिशत और सहकारी सदस्यों का 35 प्रतिशत शामिल हैं। एनडीडीबी डेयरी सर्विसेज के तहत 48,000 से अधिक महिला–नेतृत्व वाली सहकारी समितियाँ और 16 पूर्ण–महिला एमपीओ लगभग 35,000 गाँवों में 12 लाख उत्पादकों का प्रतिनिधित्व करती हैं। आंध्र प्रदेश का पूर्ण–महिला श्रीजा दुग्ध उत्पादक संगठन सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में उभरा है, जिसने शिकागो में विश्व डेरी शिखर सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय डेरी फेडरेशन से डेरी इनोवेशन अवार्ड जीता है।

डेरी क्षेत्र में नए जीएसटी सुधार

भारत के डेरी क्षेत्र को एक बड़ा प्रोत्साहन मिला जब 3 सितंबर 2025 को हुई अपनी बैठक में 56वीं जीएसटी परिषद ने दूध और दुग्ध उत्पादों पर कर सुसंगतिकरण के एक व्यापक सेट को मंजूरी दी। यह निर्णय डेयरी उद्योग के लिए जीएसटी दरों के सबसे व्यापक संशोधनों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। यह सुनिश्चित करता है कि कई व्यापक रूप से उपभोग किए जाने वाले उत्पाद अब या तो कर से मुक्त हैं या 5% के दायरे में रखे गए हैं।

संशोधित दरें, जो 22 सितंबर 2025 से लागू हुईं, संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में पर्याप्त राहत प्रदान करती हैं। अल्ट्रा–हाई टेम्परेचर (यूएचटी) दूध और प्री–पैकेज्ड पनीर अब कर–मुक्त हैं। मक्खन, घी, डेरी स्प्रेड, पनीर (चीज), गाढ़ा दूध (कंडेंस्ड मिल्क) और दूध–आधारित पेय पदार्थों जैसी वस्तुओं को 12 प्रतिशत स्लैब से हटाकर 5 प्रतिशत स्लैब में कर दिया गया है। आइसक्रीम, जिस पर पहले 18 प्रतिशत जीएसटी लगता था, उसे भी घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त, दूध के डिब्बों (मिल्क कैन) पर अब 12 प्रतिशत के बजाय 5 प्रतिशत कर लगता है।

इस सुधार से उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों पर वित्तीय बोझ कम करके डेरी अर्थव्यवस्था के मजबूत होने की उम्मीद है। आठ करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवार, जिनमें से कई छोटे, सीमांत या भूमिहीन किसान शामिल हैं अपनी आजीविका के लिए डेरी फार्मिंग पर निर्भर हैं, उन्हें घटी हुई कर संरचना से सीधा लाभ होगा। कम कर संरचना से परिचालन लागत कम होने, मिलावट पर अंकुश लगने और घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में भारतीय डेरी उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ने की भी संभावना है।

डेरी विकास के राष्ट्रीय प्रयास–श्वेत क्रांति 2.0

श्वेत क्रांति 2.0 के लिए मानक संचालन प्रक्रिया का शुभारंभ 19 सितंबर 2024 को हुआ, जिसके बाद 25 दिसंबर 2024 को इसे औपचारिक रूप से लागू किया गया। यह डेयरी सहकारिताओं को मजबूत करने, रोजगार के अवसरों का विस्तार करने और संगठित डेरी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए एक नए राष्ट्रीय प्रयास का संकेत देता है। यह कार्यक्रम 2024–25 से 2028–29 तक 5 वर्षों के लिए चलेगा, जिसके दौरान सहकारिताओं द्वारा दूध की खरीद बढ़कर 1,007 लाख किलोग्राम प्रतिदिन होने का अनुमान है।

इस पहल की एक केंद्रीय विशेषता 75,000 नई डेरी सहकारी समितियों के निर्माण के माध्यम से सहकारी नेटवर्क का विस्तार करना है। ये समितियाँ उन गाँवों में स्थापित की जाएंगी, जो अभी भी संगठित डेरी प्रणाली से बाहर हैं, जिसमें महिला किसानों को शामिल करने पर विशेष जोर दिया जाएगा। इस विस्तार के साथ–साथ, 46,422 मौजूदा डेरी सहकारी समितियों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने और उनके सदस्यों की आय में सुधार करने के लिए मजबूत किया जाएगा।

श्वेत क्रांति 2.0 स्थिरता और कुशल संसाधन उपयोग पर भी एक मजबूत ध्यान केंद्रित करता है। तीन विशेष बहु–राज्य सहकारी समितियाँ (एमएससीएस) स्थापित की जा रही हैं। एक पशु आहार, खनिज मिश्रण और अन्य आवश्यक इनपुट की आपूर्ति करेगी। दूसरी जैविक खाद के उत्पादन का समर्थन करेगी और बायोफर्टिलाइजर तथा बायोगैस का उत्पादन करने के लिए गाय के गोबर और कृषि अवशेषों के वैज्ञानिक उपयोग को बढ़ावा देगी, जिससे प्राकृतिक खेती और सर्कुलर इकोनॉमी में योगदान मिलेगा। तीसरी मृत पशुओं की खाल, हड्डियाँ और सींग का संगठित और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार तरीके से प्रबंधन करेगी।

साबर डेयरी की नई इकाई से सहकारी विकास को प्रोत्साहन

केन्द्रीय गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री ने 3 अक्टूबर 2025 को हरियाणा के रोहतक में साबर डेयरी संयंत्र का उद्घाटन किया। लगभग ₹350 करोड़ की लागत से निर्मित यह सुविधा अब दही, छाछ और योगर्ट के उत्पादन के लिए समर्पित देश का सबसे बड़ा संयंत्र है। इसे दुग्ध उत्पादकों का समर्थन करने के लिए विकसित किया गया है और यह हरियाणा को दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (दिल्ली–एनसीआर) की डेरी उत्पादों की पूरी मांग को पूरा करने में सक्षम बनाएगा।

उद्घाटन के दौरान, यह बात रेखांकित की गई कि साबर डेरी, जो गुजरात में एक सहकारी पहल के रूप में शुरू हुई थी, ने अब नौ राज्यों में अपने परिचालन का विस्तार किया है और किसानों के लिए नए रास्ते खोलना जारी रखा है। यह जिस सहकारी आंदोलन का प्रतिनिधित्व करती है, उसने 35 लाख महिलाओं को सशक्त बनाया है, जो अकेले गुजरात में सालाना ₹85,000 करोड़ का कारोबार करती हैं।

रोहतक संयंत्र को पर्याप्त उत्पादन क्षमता के साथ डिजाइन किया गया है, ताकि प्रतिदिन 150 मीट्रिक टन दही, 10 मीट्रिक टन योगर्ट, तीन लाख लीटर छाछ और 10,000 किलोग्राम मिठाइयों का उत्पादन किया जा सके। इस पैमाने के उत्पादन से राजस्थान, हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाब, उत्तर प्रदेश और बिहार सहित अन्य राज्यों में किसानों की आय बढ़ने और सहकारी डेरी नेटवर्क के मजबूत होने की उम्मीद है।

भारत के डेरी परिदृश्य का विस्तार एवं भविष्य की संभावनाएं

कृषि और प्रसंस्करित खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के सितंबर 2025 के मासिक डैशबोर्ड के अनुसार, मजबूत घरेलू मांग, प्रजनन विधियों में सुधार और अनुकूल नीतियों के कारण आने वाले वर्षों में भारत का दूध उत्पादन लगातार बढ़ने की आशा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सेक्स सॉर्टेड सीमेन जैसे उन्नत माध्यमों के बढ़ते उपयोग ने किसानों को पशुओं के समूह की गुणवत्ता में सुधार करके और उत्पादकता बढ़ाकर ज्यादा उत्पादन प्राप्त करने में मदद की है। दुनिया के सबसे बड़े दूध उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति को दर्शाते हुए, भारत से 2025–26 में वैश्विक दूध आपूर्ति में लगभग 32 प्रतिशत का योगदान करने की संभावना है। एपीडा के डेरी (सितंबर 2025) के मासिक डैशबोर्ड के अनुसार, 2026 के लिए अनुमान है कि राष्ट्रीय दूध उत्पादन 242 मिलियन टन होगा। देश में मवेशियों की आबादी भी लगातार बढ़ रही है, जो 2024 में 35 प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 36 प्रतिशत हो गई है, जो इसके डेयरी क्षेत्र के दीर्घकालिक लचीलेपन को मजबूत करता है।

भारत का लक्ष्य 2028–29 तक अपनी दूध प्रसंस्करण क्षमता को 100 मिलियन लीटर तक बढ़ाना है, जो वर्तमान स्तर

660 लाख लीटर प्रतिदिन से काफी अधिक है। पशुधन पहल के माध्यम से व्यापक पशुधन डेटा संकलित किया जा रहा है, जो बेहतर योजना और लक्षित हस्तक्षेपों का समर्थन करेगा। नस्ल सुधार में काफी प्रगति हो रही है, और मवेशियों को खुरपका और मुंहपका रोग तथा ब्रूसेलोसिस से बचाने के लिए बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान चल रहे हैं। ये टीके मुफ्त प्रदान किए जा रहे हैं, जिसका राष्ट्रीय लक्ष्य 2030 तक इन दोनों बीमारियों को खत्म करना है। इन संयुक्त प्रयासों से उत्पादकता बढ़ने, मूल्य श्रृंखला मजबूत होने और निकट भविष्य में भारत को दूध के एक प्रमुख निर्यातक के रूप में उभरने की स्थिति में आने की उम्मीद है। संशोधित राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम (एनपीडीडी) के तहत, 2025–26 में 21,902 नई डेयरी सहकारी समितियों की स्थापना का लक्ष्य रखा गया है, जिसके लिए ₹407.37 करोड़ का वित्तीय परिव्यय है। इसमें से ₹211.90 करोड़ भारत सरकार द्वारा प्रदान किया जा रहा है।

डेरी क्षेत्र में उत्कृष्टता का सम्मान

पशुपालन और डेरी विभाग द्वारा राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार 2025 की घोषणा की गई है, जो पशुधन और डेयरी क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देते हैं। इन पुरस्कारों को 26 नवंबर 2025 को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर प्रदान किया जाता है, जो भारतीय डेरी क्षेत्र के लिए उनके प्रतीकात्मक महत्व को रेखांकित करता है।

यह पुरस्कार स्वदेशी मवेशियों या भैंसों का पालन करने वाले सर्वश्रेष्ठ डेरी किसानों, शीर्ष प्रदर्शन करने वाली डेरी सहकारी समितियों या दुग्ध उत्पादक संगठनों, और कुशल कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियनों को सम्मानित करते हैं। पहली दो श्रेणियों में विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान के लिए क्रमशः ₹5 लाख, ₹3 लाख और ₹2 लाख की पुरस्कार राशि प्राप्त होती है। इस पहल का उद्देश्य डेरी समुदाय के भीतर उत्कृष्टता, नवाचार और समर्पण को बढ़ावा देना है, और भारत के सतत् और समावेशी डेयरी विकास के मिशन को आगे बढ़ाना है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2025 आणंद में रखी गई सहकारी नींव से लेकर विश्व के अग्रणी दूध उत्पादक के रूप में भारत के डेरी क्षेत्र के वर्तमान स्थान तक के विकास को दर्शाता है। ऑपरेशन फ्लड के माध्यम से हासिल की गई प्रगति, डेरी सहकारिताओं के मजबूत होने और निरंतर सरकारी समर्थन के परिणामस्वरूप कुल दूध उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई है, प्रति व्यक्ति उपलब्धता बढ़ी है और दुधारू पशुओं की उत्पादकता में सुधार हुआ है। राष्ट्रीय गोकुल मिशन, राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम और राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम जैसे कार्यक्रमों ने वैज्ञानिक प्रजनन की पहुँच का विस्तार किया है, पशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार किया है और डेरी बुनियादी ढांचे को मजबूत किया है।

महिला–नेतृत्व वाली सहकारिताओं, बड़े पैमाने के उत्पादक संगठनों और अमूल तथा साबर डेयरी जैसे प्रमुख डेरी संस्थानों का बढ़ता महत्व इस क्षेत्र की समावेशिता और इसके बढ़ते आर्थिक प्रभाव को रेखांकित करता है। जीएसटी परिषद के तहत किए गए सुधार, बढ़ी हुई प्रसंस्करण क्षमता और श्वेत क्रांति 2.0 का फोकस एक मजबूत और अधिक टिकाऊ डेयरी प्रणाली के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है। जब देश राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाता है, तो यह उन किसानों और सहकारिताओं को मान्यता देता है, जिनके प्रयास एक लचीली, उत्पादक और भविष्योन्मुखी डेरी अर्थव्यवस्था को आकार देना जारी रखते हैं। ■

पशु पोषण

गाय-बैलों की विभिन्न अवस्थाओं में संतुलित आहार

संजय कुमार[1], सविता कुमारी[2], रजनी कुमारी[3], जे॰ पी॰ गुप्ता[4], एवं अंशुल कुणाल[5],
[1]प्राध्यापक पशु–पोषण विभाग, [2]सह–प्रध्यापक, सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग, [3]वरीय वैज्ञानिक
आई॰सी॰ए॰आर॰–आर॰सी॰ए॰आर॰, पटना, [4]सह–प्रध्यापक, पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग,
[5]एम.वी.एस.सी स्कॉलर पशु–पोषण विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

पशुपालन में पोषण, उत्पादन, स्वास्थ्य और लाभप्रदता की नींव है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है पशुओं को संतुलित आहार प्रदान करना। संतुलित आहार का अर्थ है–पशु को उसके शरीर के भार, आयु और उत्पादन स्तर के अनुसार सभी आवश्यक पोषक तत्व जैसे ऊर्जा, प्रोटीन, वसा, खनिज, विटामिन तथा पानी उचित मात्रा और अनुपात में देना।

संतुलित आहार–उत्तम स्वास्थ्य

संतुलित आहार केवल पर्याप्त मात्रा में चारा देना नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिक तरीके से पोषक तत्वों का सही संयोजन है ताकि पशु का रखरखाव, वृद्धि, प्रजनन और दुग्ध उत्पादन सभी ठीक प्रकार से हो सके।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार, "संतुलित आहार वह मात्रा है जो पशु की रखरखाव और उत्पादन संबंधी 24 घंटे की सभी पोषक आवश्यकताओं को उचित मात्रा और अनुपात में पूरा करती है।"

सरल शब्दों में, संतुलित आहार का मतलब है "सही आहार, सही मात्रा में और सही समय पर देना।"

संतुलित आहार का महत्व

संतुलित आहार देना एक ऐसा उपाय है, जिससे बिना अधिक खर्च बढ़ाए पशु की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। चारे का खर्च एक डेरी फार्म की कुल लागत का लगभग 60–70 प्रतिशत होता है, इसलिए आहार का वैज्ञानिक संतुलन अत्यंत आवश्यक है।

संतुलित आहार के प्रमुख लाभ

- **दूध उत्पादन और गुणवत्ता में वृद्धि**–पर्याप्त ऊर्जा और प्रोटीन मिलने से दूध की मात्रा और वसा प्रतिशत, दोनों बढ़ते हैं।
- **विकास दर में सुधार**–बछड़ों और बढ़ती उम्र के पशुओं में हड्डियों और मांसपेशियों का उचित विकास होता है।
- **प्रजनन क्षमता में सुधार**–संतुलित पोषण से नियमित हीट और सफल गर्भधारण होता है।
- **दूध प्रति लीटर लागत में कमी**–पोषक तत्वों का बेहतर उपयोग होता है और बर्बादी घटती है।
- **रोग प्रतिरोधकता में वृद्धि**–पोषक तत्वों की कमी से होने वाले रोग जैसे मिल्क फीवर, कीटोसिस, बंध्यता आदि से बचाव होता है।
- **दीर्घायु और स्वास्थ्य में सुधार**–अच्छे पोषण से पशु लंबे समय तक स्वस्थ और उत्पादक रहते हैं।

गाय–बैलों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों के प्रकार

गाय–बैलों को मुख्यतः छह प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक का शरीर में अपना विशेष महत्व है।

1. कार्बोहाइड्रेट

- शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं।
- स्रोतः हरा चारा, भूसा, मक्का, जौ, ओट्स, गुड़ आदि।

2. प्रोटीन

- शरीर की वृद्धि, दूध उत्पादन और ऊतक निर्माण के लिए आवश्यक।
- स्रोतः सरसों खली, सोयाबीन खली, मूंगफली खली, दालें, दलहनी चारे।

3. वसा

- ऊर्जा का सघन स्रोत, आहार को स्वादिष्ट बनाती है।
- स्रोतः तेल बीज, बायपास फैट, घी या तेल अवशेष।

4. खनिज

- हड्डियों के विकास, एंजाइम क्रिया और दूध उत्पादन के लिए आवश्यक।
  - मुख्य खनिजः कैल्शियम, फास्फोरस, सोडियम, पोटैशियम, सल्फर, मैग्नीशियम।
  - सूक्ष्म खनिजः आयरन, जिंक, कॉपर, कोबाल्ट, आयोडीन, सेलेनियम।
- प्रतिदिन लगभग 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण देना चाहिए।

5. विटामिन

- वृद्धि, प्रजनन और रोग प्रतिरोधकता में मदद करते हैं।
- वसा में घुलनशीलः A, D, E, K
- जल में घुलनशीलः B–समूह, C
- विटामिन की कमी से कमजोरी, रोग प्रतिरोधकता में कमी और बांझपन हो सकता है।

6. पानी

- सबसे अधिक आवश्यक, परंतु अक्सर "भूला हुआ पोषक तत्व" कहा जाता है।
- एक दूध देने वाली गाय (10 लीटर दूध/दिन) को 60–80 लीटर पानी प्रतिदिन चाहिए।

गाय–बैलों की विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार संतुलित आहार

गाय–बैलों की पोषण आवश्यकता उनकी आयु, वजन, उत्पादन और शारीरिक अवस्था के अनुसार बदलती रहती है। इसलिए प्रत्येक अवस्था में आहार का संतुलन अलग–अलग होना चाहिए।

1. बछड़े (जन्म से 6 माह तक)

उद्देश्यः स्वस्थ वृद्धि और रूमेन (अंतड़ी) का विकास।

- कोलोस्ट्रम (पहला दूध): जन्म के 2 घंटे के भीतर शरीर के वजन का 10% अवश्य दें।
- दूध या मिल्क रिप्लेसरः 3–4 माह तक दें और धीरे–धीरे ठोस आहार शुरू करें।
- हरी घास और काफ स्टार्टर्सः 2 सप्ताह बाद देना शुरू करें।
- खनिज मिश्रणः प्रतिदिन 25–30 ग्राम।

उदाहरण (प्रति दिन):

- दूध या कोलोस्ट्रमः शरीर वजन का 10%
- काफ स्टार्टरः 0.5–1 किग्रा
- हरा चाराः इच्छानुसार
- पानीः हमेशा उपलब्ध

2. बछिया (6 माह से ब्याने तक)

उद्देश्यः समय पर प्रजनन हेतु लक्ष्य भार (300–325 किग्रा) प्राप्त करना।

- अत्यधिक मोटापा न हो, इसलिए आहार नियंत्रित रखें।
- हरा चाराः शरीर वजन का 2%
- संकेंद्रित आहार (कंसंट्रेट): 1–1.5%
- प्रतिदिन खनिज मिश्रण व नमक दें।

उदाहरण (200 किग्रा बछिया के लिए):

- हरा चाराः 15–20 किग्रा
- सूखा चाराः 3–4 किग्रा

- संकेंद्रित आहार: 2–3 किग्रा
- खनिज मिश्रण: 50 ग्राम

3. गर्भित गाय

उद्देश्य: स्वास्थ्य बनाए रखना और आगामी दुग्ध उत्पादन की तैयारी।

- अत्यधिक ऊर्जा वाला आहार न दें, ताकि मोटापा न बढ़े।
- ब्याने से 2 माह पहले धीरे–धीरे संकेंद्रित आहार बढ़ाएँ।
- कैल्शियम, फास्फोरस और विटामिन्स का पूरक दें।

उदाहरण (400 किग्रा गाय):

- हरा चारा: 20–25 किग्रा
- सूखा चारा: 5 किग्रा
- संकेंद्रित आहार: 2.5–3 किग्रा
- खनिज मिश्रण: 60 ग्राम

ध्यान दें: ब्याने से पहले अधिक कैल्शियम देने से बचें (मिल्क फीवर का खतरा)।

4. दूध देने वाली गाय

उद्देश्य: अधिक दूध उत्पादन हेतु ऊर्जा और प्रोटीन की पूर्ति।

- रखरखाव आवश्यकता: प्रत्येक 2.5 लीटर दूध के लिए 1 किग्रा संकेंद्रित आहार।
- चारे का अनुपात: 60% रफेज (हरा/सूखा चारा) और 40% कंसंट्रेट।
- उच्च उत्पादन वाली गायों को बायपास प्रोटीन और बायपास फैट दें।
- पर्याप्त पानी (80–100 लीटर/दिन) अवश्य दें।

उदाहरण (10 लीटर दूध प्रति दिन देने वाली गाय):

- हरा चारा: 25 किग्रा
- सूखा चारा: 5 किग्रा
- संकेंद्रित आहार: 6–7 किग्रा
- खनिज मिश्रण: 60 ग्राम

5. सूखी गाय

उद्देश्य: शरीर की स्थिति सुधारना और अगले ब्याने की तैयारी।

- केवल रखरखाव हेतु आहार दें।
- हरा चारा पर्याप्त मात्रा में दें, ताकि रूमेन सक्रिय रहे।

उदाहरण (400 किग्रा गाय):

- हरा चारा: 20–25 किग्रा
- सूखा चारा: 4–5 किग्रा
- संकेंद्रित आहार: 2 किग्रा
- खनिज मिश्रण: 50 ग्राम

6. प्रजनक सांड

उद्देश्य: स्वास्थ्य और शुक्राणु गुणवत्ता बनाए रखना।

- मोटापा न बढ़ने दें।
- ज़िंक, सेलेनियम, कॉपर जैसे सूक्ष्म खनिज और विटामिन A, E दें।
- प्रतिदिन पर्याप्त व्यायाम आवश्यक है।

उदाहरण (500 किग्रा सांड):

- हरा चारा: 25–30 किग्रा
- सूखा चारा: 5 किग्रा
- संकेंद्रित आहार: 3–4 किग्रा
- खनिज मिश्रण: 70 ग्राम

निष्कर्ष

संतुलित आहार गाय–बैलों के स्वास्थ्य, उत्पादकता और लाभप्रदता का आधार है। प्रत्येक अवस्था में पशुओं की पोषण आवश्यकता अलग–अलग होती है, इसलिए आहार संतुलन भी उसी अनुसार बदलना चाहिए।

असंतुलित आहार से उत्पादन में गिरावट, प्रजनन संबंधी समस्याएँ और आर्थिक हानि होती है। जबकि वैज्ञानिक ढंग से तैयार किया गया संतुलित आहार दूध उत्पादन बढ़ाता है, पशु को स्वस्थ रखता है और किसान की आमदनी में वृद्धि करता है।

जैसा कि पशु पोषण में कहा जाता है .

"आप गाय से भूख के सहारे लाभ नहीं कमा सकते,

केवल संतुलित आहार देकर ही लाभ कमा सकते हैं।" ■

आमदनी

सोलर पार्क और ग्रामीण आजीविका: खेती-पशुपालन पर प्रभाव

राकेश चौधरी[1], पारितोष कुमार[2], विकास कुमार[3], जुगल किशोर[4], एवं अभिजीत सिंह शेखावत[5]

[1]शिक्षण सहायक, डेयरी व्यापार और डेयरी व्यवसाय प्रबंधन विभाग, डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी, जयपुर, [2]वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता, संयुक्त निदेशालय (विस्तार शिक्षा), भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान,इज्जतनगर, [3]एम.एससी. अनुसंधान विद्वान, डेयरी विस्तार प्रभाग, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान,करनाल, [4]एम.एससी. अनुसंधान विद्वान, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय,इम्फाल, [5]एम.एससी. विद्यार्थी, शस्य विज्ञान,विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन (मध्य प्रदेश)

परिचय

भारत नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से उभर रहा है और इसने 2030 तक 500 गीगावाट गैर–जीवाश्म ऊर्जा क्षमता हासिल करने का लक्ष्य रखा है, जो इसकी कुल स्थापित पॉवर क्षमता के आधे से अधिक होगा। इसके अतिरिक्त भारत का लक्ष्य है, 2030 तक अपनी GDP आधारित उत्सर्जन तीव्रता को (2005 के स्तर की तुलना में) 45% तक कम करना और 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करना। इन लक्ष्यों की दिशा में हो रही प्रगति का प्रमाण यह है कि भारत आज विश्व का तीसरा सबसे बड़ा सोलर एनर्जी उत्पादक है, और भारत की संचयी सौर ऊर्जा क्षमता जुलाई 2025 तक 119.02 गीगावाट हो गई है। यह विस्तार विशेष रूप से उन क्षेत्रों में हो रहा है, जहाँ लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, और इनमें से 47 प्रतिशत लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि तथा डेरी पर निर्भर हैं।

सोलर पार्कों का विकास देश के ऊर्जा–भविष्य के लिए आवश्यक है, लेकिन इससे खेती और पशुपालन आधारित आजीविका पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है, क्योंकि भारत में कृषि का औसत जोत आकार सिर्फ 1.08 हेक्टेयर है और पशुधन छोटे कृषि परिवारों की आय में 16 प्रतिशत योगदान देता है। इसलिए जब हजारों एकड़ भूमि अचानक ऊर्जा परियोजनाओं के अधीन आ जाती है, तो इसका प्रभाव सीधे ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।

सोलर पार्कों का विस्तार और ग्रामीण संसाधनों पर प्रभाव

भारत में बड़े पैमाने पर सोलर पार्कों का विस्तार ग्रामीण संसाधनों जैसे भूमि, जल, कृषि और पशुपालन पर बहुस्तरीय दबाव उत्पन्न कर रहा है। हालिया भू–स्थानिक आकलनों से स्पष्ट हुआ है कि देश के अनेक यूटिलिटी–स्केल सोलर फार्म लगभग 40% कृषि योग्य भूमि पर स्थापित हुए हैं, जिससे भूमि उपयोग का स्वरूप कृषि से ऊर्जा उत्पादन की ओर तेजी से बदल रहा है। भूमि अधिग्रहण का यह पैटर्न विशेष रूप से राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे जल संकट ग्रस्त राज्यों में अधिक देखा गया है, जहाँ पहले से ही कृषि भूमि और चराई संसाधनों पर दबाव है। वैश्विक और भारतीय अध्ययनों में पाया गया है कि बड़े सोलर पार्क अकसर चारागाह भूमि को प्रभावित करते हैं, जिसके कारण पारंपरिक पशुपालन प्रणाली,चारे की उपलब्धता और ग्रामीण डेयरी आधारित अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचता है। इसी दौरान, शोध यह भी दर्शाते हैं कि सोलर पैनलों के बड़े समूह, स्थानीय जल–चक्र, जैसे मिट्टी की नमी, भूजल पुनर्भरण, वाष्पीकरण को सीमित करते हैं, जिससे सिंचाई और पशुपालन दोनों के लिए जल उपलब्धता घट सकती है। इसके अतिरिक्त, कई वैज्ञानिक अध्ययनों ने यह पाया है कि सोलर पार्क अपनी सतहतापीय विशेषताओं के कारण आसपास 'हीट–आइलैंड' प्रभाव उत्पन्न करते हैं, जिससे स्थानीय तापमान बढ़ता है, मिट्टी तेजी से सूखती है और फसलों तथा पशुओं पर अतिरिक्त गर्मी–तनाव पड़ता है। इन सभी कारकों का सम्मिलित प्रभाव ग्रामीण आजीविका, विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों पर, प्रतिकूल पड़ता है, क्योंकि कृषि और डेरी उनकी आय की मुख्य धुरी हैं।

सोलर पार्कों के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव

भारत में सोलर पार्कों के निर्माण और संचालन का प्रभाव केवल ऊर्जा उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्थानीय पर्यावरण, सामाजिक संरचना, कृषि, डेरी और सांस्कृतिक मान्यताओं पर भी गहरा असर डालता है। बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण और निर्माण के दौरान वनस्पतियां हटाई जाती हैं और प्राकृतिक आवास बाधित होता है, जिससे जैव विविधता प्रभावित होती है। राजस्थान जैसे राज्यों में, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोदावन),ब्लैकबक और चिंकारा जैसे प्राणियों के आवागमन में रुकावट आती है, और राज्य वृक्ष खेजरी जैसे संवेदनशील पेड़ उखाड़े जाते हैं।

सोलर पार्कों के लिए भूमि आवंटन स्थानीय समुदायों की पारंपरिक उपयोग भूमि जैसे चराई भूमि और कृषि भूमि के साथ टकराता है, जिससे किसानों और डेरी संचालकों की आजीविका प्रभावित होती है। जल संसाधनों पर दबाव बढ़ता है, क्योंकि सोलर पैनलों की सफाई और संचालन के लिए पानी की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, स्थानीय समुदायों को परियोजना विकास और संचालन में शामिल नहीं किया जाता, जिससे रोजगार के अवसर सीमित रहते हैं। अकसर कुशल श्रमिक शहरों से लाए जाते हैं, और भूमि बेचने वाले किसानों को केवल एकमुश्त मुआवजा मिलता है, जबकि दीर्घकालिक आय का कोई स्थायी स्रोत नहीं मिलता, जिससे सामाजिक और आर्थिक असमानता बढ़ती है।

सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमि पर सोलर परियोजनाओं का निर्माण भी तनाव उत्पन्न करता है। उदाहरण के तौर पर, 2012 में राजस्थान के जैसलमेर जिले के असकांद्रा गाँव में 235 मेगावाट की सोलर परियोजना स्थानीय देवी जोयमति के लिए आरक्षित भूमि पर स्थापित की गई। यह भूमि पिछले 40 वर्षों से किसानों के पारंपरिक उपयोग के लिए सुरक्षित थी,लेकिन कुछ महीनों में ही निजी कंपनी को आवंटित कर दी गई। गाँव के बुजुर्गों के अनुसार, भूमि पवित्र थी और इसका उपयोग केवल पशुओं के चराने के लिए था ना कि किसी और उपयोग के लिए।

भविष्य की दिशाः समस्याएँ, अवसर और सतत् समाधान

सोलर ऊर्जा भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके विस्तार को कृषि और डेरी की सुरक्षा के साथ संतुलित करना आवश्यक है। वर्तमान में बड़ी सोलर परियोजनाओं के कारण भूमि अधिग्रहण, जल उपयोग और पारंपरिक चराई/खेती पर दबाव बढ़ा है, जिससे ग्रामीण आजीविका और सामाजिक ढाँचे पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, स्थानीय समुदायों को विकास प्रक्रिया में पर्याप्त भागीदारी नहीं मिलती और रोजगार अवसर सीमित रहते हैं।

सतत् समाधान के रूप में एग्री–वोल्टाइक एक प्रभावी मॉडल बनकर उभरा है। इसमें सोलर पैनल को ऊँचाई पर लगाया जाता है, ताकि नीचे खेती या चराई जारी रह सके। इससे भूमि का सह–उपयोग संभव होता है, पारंपरिक कृषि और पशुपालन जारी रह सकता है, और किसानों के लिए अतिरिक्त आय के अवसर बन सकते हैं। जल संरक्षण के लिए ड्राई–क्लीनिंग तकनीक, वर्षा जल संचयन और भूजल दोहन पर कड़े नियम लागू किए जा सकते हैं। गोचर भूमि की सुरक्षा और चारागाह उत्पादन के लिए सामुदायिक चारा बैंक या हाइड्रोपोनिक चारा उत्पादन जैसी वैकल्पिक प्रणालियाँ विकसित की जा सकती हैं।

भारत सरकार द्वारा कारगिल में सोलर ऊर्जा पर आधारित डेरी स्थापित करने की योजना है, ताकि सेना को ताजा दूध की आपूर्ति हो सके।

सामुदायिक भागीदारी और लाभ वितरण भी आवश्यक हैं। भूमि लीज़ मॉडल के तहत किसानों को नियमित आय मिले,स्थानीय लोगों को सोलर पार्क में रोजगार और प्रशिक्षण मिले,और निर्णय प्रक्रिया में ग्राम पंचायतों की भूमिका सुनिश्चित की जाए। इस तरह के मॉडल न केवल ऊर्जा परियोजनाओं को सामाजिक स्वीकृति देंगे, बल्कि ग्रामीण विकास और आजीविका को भी सुनिश्चित करेंगे।

निष्कर्ष

सोलर ऊर्जा भारत के ऊर्जा–भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य है। यह स्वच्छ, हरित और नवीकरणीय स्रोत होने के बावजूद, कृषि भूमि,चराई क्षेत्र, जल संसाधन और स्थानीय पारिस्थितिकी पर संभावित नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। वर्तमान में ये प्रभाव मामूली प्रतीत हो सकते हैं,लेकिन जब सोलर ऊर्जा मुख्य ऊर्जा स्रोत बन जाएगी,तो इनके दीर्घकालिक परिणाम गंभीर हो सकते हैं। इसलिए नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को केवल विकास के दृष्टिकोण से नहीं,बल्कि पर्यावरणीय और सामाजिक–आर्थिक प्रभावों के सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के बाद ही लागू करना आवश्यक है।

इन नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए उचित उपाय अपनाए जा सकते हैं। इसमें स्थानीय समुदायों की आजीविका पर निर्भरता को ध्यान में रखना,सभी परियोजनाओं के लिए अनिवार्य करना चाहिए। पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अध्ययन, ग्राम पंचायतों को अधिक निर्णयाधिकार देना, स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करना और आसपास के निवासियों को बिजली की पहुंच सुनिश्चित करना इसमें शामिल हैं।

सोलर ऊर्जा और ग्रामीण आजीविका दोनों को संतुलित करते हुए भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाना संभव है। यदि परियोजनाएं व्यापक, वैज्ञानिक और समुदाय–केंद्रित दृष्टिकोण के साथ लागू की जाएँ, तो यह न केवल पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करेगी, बल्कि कृषि और डेरी पर आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सुरक्षित और सशक्त बनाएगी। इस प्रकार, भारत का ऊर्जा–भविष्य तभी स्थायी और समावेशी होगा, जब नवीकरणीय ऊर्जा विकास को स्थानीय संसाधनों, पारिस्थितिकी और ग्रामीण समाज के हितों के साथ संतुलित किया जाए। ■

आधुनिकीकरण

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा बायो-सीएनजी और फर्टिलाइजर प्लांट का उद्घाटन एवं पावडर प्लांट का शिलान्यास

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने 6 दिसंबर 2025 को गुजरात के वाव–थराद जिले में बनास डेयरी द्वारा नवनिर्मित बायो–सीएनजी और फर्टिलाइजर प्लांट का उद्घाटन एवं 150 टन के पावडर प्लांट का शिलान्यास किया। इस अवसर पर गुजरात के विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकर चौधरी, केन्द्रीय सहकारिता राज्य मंत्री श्री कृष्ण पाल गुर्जर और श्री मुरलीधर मोहोल, केन्द्रीय सहकारिता सचिव डॉ. आशीष भूटानी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि बनासकांठा में बनास डेयरी की शुरुआत करने वाले गलबाभाई नानजीभाई पटेल ने जो यात्रा शुरू की थी, वह धीरे–धीरे बढ़ते–बढ़ते इस मुकाम पर पहुँच गई है कि आज यहाँ 24 हजार करोड़ रुपये तक का कारोबार हो रहा है। उन्होंने कहा कि वह देश भर में जहाँ भी जाते हैं, वहाँ गर्व से कहते हैं कि गुजरात के गाँवों को समृद्ध बनाने का काम गुजरात की माताओं–बहनों ने किया है। यहाँ के किसान भाइयों, विशेष रूप से सहकारी आंदोलन के अगुआ लोगों, गाँव की दूध मंडलियों के चेयरमैन और बनास डेयरी के डायरेक्टर्स को शायद पता भी न हो कि उन्होंने कितना बड़ा चमत्कार कर दिखाया है। उन्होंने कहा कि 24 हजार करोड़ रुपये की कंपनी खड़ी करना बड़े–बड़े कॉर्पोरेट्स के लिए भी पसीना

छुड़ाने वाला काम होता है, लेकिन बनासकांठा की बहनों और किसानों ने देखते–ही–देखते 24 हजार करोड़ रुपये की कंपनी खड़ी कर दी।

श्री अमित शाह ने कहा कि आज वह अपने साथ देश की संसद के दोनों सदनों, लोकसभा और राज्यसभा, के सांसदों को लेकर आए हैं। उन्होंने कहा कि आगामी जनवरी में पूरे देश की सभी डेयरियों के लगभग 250 चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर बनासकांठा के सहकारी डेयरी क्षेत्र में हुए चमत्कार को अपनी आँखों से देखने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि 1985–87 के अकाल के बाद जब वह इस इलाके में आते थे और किसानों से पूछते थे तो बताया जाता था कि वह पूरे साल में सिर्फ एक फसल उगा पाते हैं, लेकिन अब बनासकांठा का किसान एक साल में तीन–तीन फसल उगाता है। मूंगफली भी उगाता है, आलू भी उगाता है, गर्मियों में बाजरा भी बोता है और खरीफ की फसल भी लेता है, जबकि पच्चीस साल पहले बनासकांठा में तीन फसल की खेती करना एक स्वप्न मात्र था।

बड़ते कदम

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात के उन इलाकों से यहाँ पानी की उपलब्धता कराने का काम किया, जहां पानी प्रचुर मात्र में उपलब्ध था। उन्होंने कहा कि सुजलाम–सुफलाम योजना के तहत नर्मदा और माही नदी का अतिरिक्त पानी बनासकांठा पहुँचा। पहले यहाँ का किसान दूसरों के खेतों में मजदूरी करता था। आज उसी किसान ने अपनी जमीन को स्वर्ग बना दिया और पूरे बनासकांठा को समृद्ध बना दिया।

श्री अमित शाह ने कहा कि हमारी यह परंपरा या आदत नहीं रही कि कोई बड़ा काम करने पर उसका पूरा दस्तावेजीकरण किया जाए या उसका इतिहास लिखा जाए। लेकिन उन्होंने दो विश्वविद्याविद्यालयों को जिम्मेदारी सौंपी है कि वे बनासकांठा और मेहसाणा में जल–संचय तथा पानी के माध्यम से आई समृद्धि और लोगों के जीवन में आए परिवर्तन पर विस्तृत रिसर्च करें। उन्होंने कहा कि बनासकांठा का यह परिश्रम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा और पूरे देश के ग्रामीण विकास के इतिहास में एक प्रेरणास्रोत बनकर उभरेगा। उन्होंने कहा कि खुशी की बात यह है कि इस परिश्रम में महिलाओं का बड़ा योगदान है। श्री शाह ने कहा कि 24 हजार करोड़ रुपये के इस विशाल कारोबार में दूध इकट्ठा करने की सारी मेहनत बनासकांठा की बहनों, बेटियों और माताओं के हाथों से हुई है। उन्होंने कहा कि इन महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण की बातें करने वाली विश्व की तमाम एनजीओ के सामने सबसे जीवंत और सबसे बड़ा उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। ऐसी पारदर्शी व्यवस्था खड़ी हो चुकी है कि बिना किसी आंदोलन या बिना किसी नारे के, सीधे माताओं–बहनों के बैंक खाते में हर हफ्ते उनके दूध का पूरा पैसा पहुँच रहा है।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि बनास डेयरी आज एशिया की सबसे बड़ी दुग्ध उत्पादक डेयरी बन चुकी है। इसमें गलबा काका का बड़ा योगदान है। गलबा काका ऐसे व्यक्तित्व थे, जिनके हृदय में केवल किसान हित की भावना बसती थी। वर्ष 1960 में वडगाम और पालनपुर – सिर्फ दो तहसीलों के मात्र आठ गाँवों की दूध मंडलियों से शुरू हुई यह यात्रा आज 24 हजार करोड़ रुपए के टर्नओवर तक पहुँच गई है। उन्होंने कहा कि गलबा भाई द्वारा शुरू की गई परंपरा का मूल मंत्र बहुत सरल था कि "हमारे पास रुपये तो कम हैं, लेकिन हम खूब सारे लोग हैं।" श्री शाह ने कहा कि बहुत सारे लोगों द्वारा थोड़े–थोड़े रुपये इकट्ठा करके बड़ा काम करने का उनका विचार एक विशाल वटवृक्ष बन गया है, जो देश ही नहीं, विश्व के सभी सहकारी आंदोलनों को प्रेरणा दे रहा है।

श्री अमित शाह ने कहा कि आज बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर की पुण्यतिथि है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब ने जो संविधान इस देश को दिया, उसके बल पर दलित, गरीब, आदिवासी और पिछड़े वर्ग के लोग भी सम्मानपूर्ण जीवन जी सकें, ऐसी मजबूत व्यवस्था खड़ी हुई है। उन्होंने कहा कि वह बाबा साहब को हृदयपूर्वक श्रद्ध ांजलि अर्पित करते हैं। श्री शाह ने कहा कि लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों के तहत गुजरात में चल रही एक विशाल पदयात्रा का समापन समारोह भी आज ही है। उन्होंने कहा कि किसान और सहकारिता का मूल विचार

केंद्रीय सहकारिता मंत्री का प्रेरणाप्रद संबोधन

सरदार साहब का ही था। गुजरात ने उसे अपनाया और आज वह विचार एक विशाल वटवृक्ष बन गया है।

आधुनिकीकरण

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि आज यहाँ कई नई शुरुआतें हुई हैं, जिसके तहत बायो–सीएनजी प्लांट और मिल्क पाउडर प्लांट का उद्घाटन और अत्याधुनिक प्रोटीन प्लांट एवं हाई–टेक ऑटोमैटिक पनीर प्लांट का लोकार्पण हुआ। उन्होंने कहा कि बनास डेयरी ने सर्कुलर इकोनॉमी के जो अभिनव प्रयोग किए हैं, परामर्शदात्री समिति के सदस्य सांसदों को उससे अवगत कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि अभी तक अमूल के नेतृत्व में गुजरात की डेयरियाँ दूध इकट्ठा करती थीं, प्रोडक्ट बनाती थीं, बेचती थीं और जो लाभ होता था, उसे सीधे बहनों और किसानों के बैंक खाते में डाल देती थीं। इस मामले में हम दुनिया में सबसे आगे रहे हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि हम डेयरी को पूरी तरह सर्कुलर इकोनॉमी बनाएँ। उन्होंने कहा कि गाय–भैंस का एक ग्राम गोबर भी बर्बाद न हो, उससे जैविक खाद बने, बायो–गैस बने, बिजली बने और उससे जो कमाई हो, वह भी वापस किसान के पास आए। उन्होंने कहा कि बनास डेयरी ने जो बायो सीएनजी प्लांट की परंपरा खड़ी की, वह देश भर की सहकारी समितियों के लिए आदर्श बनेगी। श्री शाह ने कहा कि दुनिया में ऐसे बहुत–से हाई–वैल्यू डेयरी प्रोडक्ट हैं, जो अभी भारत में नहीं बन रहे। उन्होंने कहा कि वह आज ही अमूल के चेयरमैन को एक पूरी लिस्ट दे रहे हैं, ताकि उन प्रोडक्ट्स के उत्पादन का काम तुरंत शुरू हो। उन्होंने कहा कि इन प्रोडक्ट्स की कीमत बहुत अधिक मिलती है और विश्व बाजार में इनकी भारी माँग है। अगर हम सिर्फ दही, घी, पनीर बनाने की बजाय इन हाई–वैल्यू प्रोडक्ट्स पर ध्यान देंगे, तो हमारे किसान भाइयों–बहनों को कई गुना अधिक लाभ होगा।

श्री अमित शाह ने कहा कि हमें अब डेयरी के साथ–साथ बायोगैस बनाने की शुरुआत करनी है, बायो–सीएनजी बनाने की शुरुआत करनी है। उन्होंने कहा कि अब समस्त भारत की को–ऑपरेटिव डेयरियाँ पशु आहार भी बाजार से नहीं खरीदेंगी। उसे भी को–ऑपरेटिव स्तर पर ही बनाया जाएगा और पशु आहार बनाने से जो लाभ होगा, वह भी सीधे हमारी बहनों के बैंक खाते में पहुँचेगा। उन्होंने कहा कि इस पूरी व्यवस्था के लिए टेक्नोलॉजी भी चाहिए, फाइनेंस भी चाहिए और यह सब भारत सरकार ने मोदी जी के नेतृत्व में तैयार कर दिया है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि किसानों के लिए तीन नई राष्ट्रीय को–ऑपरेटिव सोसाइटी बनाई गई हैं–बीज उत्पादन एवं वितरण के लिए, जैविक उत्पादों की मार्केटिंग के लिए, और कृषि निर्यात के लिए। वहीं, डेयरी क्षेत्र के लिए तीन राष्ट्रीय स्तर की को–ऑपरेटिव बनाई गई हैं। उन्होंने कहा कि ये कुल छह को–ऑपरेटिव संस्थाएं मिलकर अब खेती से जुड़ा हर काम करेंगी–चाहे चीज़ बनाना हो, प्रोटीन बनाना हो, डेयरी व्हाइटनर, मावा, आइसक्रीम, बेबी फूड बनाना हो, तेल की पैकेजिंग, आटा, शहद, कोल्ड स्टोरेज, आलू चिप्स, बीज उत्पादन या पशु आहार बनाना हो–सारी चीजें डेयरी की इकोनॉमी के अंतर्गत आएंगी और उसका पूरा लाभ पशुपालक के खाते में पहुँचे, यह भारत सरकार का स्पष्ट और मजबूत प्लान है। श्री शाह ने कहा कि वे बनासकांठा के भाइयों–बहनों को भरोसा दिलाते हैं कि पाँच साल के अंदर, सिर्फ दूध के बढ़ते उत्पादन से जो लाभ होगा वह अलग रहेगा, लेकिन आज जितना दूध आता है, उसी मात्रा में भी सर्कुलर इकोनॉमी से आपकी आमदनी कम से कम 20 प्रतिशत से अधिक बढ़ जाएगी। इसका पूरा डिटेल्ड प्लान तैयार कर लिया गया है और बहुत सौभाग्य की बात है कि इस पूरी डिटेल्ड प्लानिंग का केंद्र बनास डेयरी का हेडक्वार्टर ही बनेगा। उन्होंने विश्वास जताया कि बनासकांठा की तरह पूरे देश के पशुपालकों और किसानों की आमदनी बढ़ाने का यह मॉडल सफल होगा।

श्री अमित शाह ने कहा कि हर गाँव की दूध मंडली को माइक्रो–एटीएम भी दे दिया गया है, जिससे फाइनेंस का काम बहुत आसान हो गया है। आने वाले दिनों में इसी माइक्रो–एटीएम से फाइनेंस की सुविधा भी शुरू होने वाली है। उन्होंने कहा कि मोदी जी ने श्वेत क्रांति 2.0 के लिए कई बड़े लक्ष्य रखे हैं और पूरा विश्वास है कि राष्ट्रीय गोकुल मिशन, एनिमल हसबैंड्री इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड, पुनर्गठित राष्ट्रीय डेयरी योजना तथा राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम, इन चारों स्तंभों के साथ श्वेत क्रांति 2.0 जरूर सफल होगी। उन्होंने कहा कि बनास डेयरी ने जो परंपरा खड़ी की है, वह केवल बनासकांठा तक सीमित नहीं रहेगी। यह पूरे देश के करोड़ों पशुपालकों के लिए समृद्धि का माध्यम बनेगी। ■

(स्रोतः पीआईबी)

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें

घर बैठे पत्रिका पाएं

इंडियन डेरी एसोसिएशन
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)

अंकों की संख्या : 6

वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक

साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 50/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्वि मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :

दुग्ध सरिता विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें) (कृपया 'टिक' करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम.....

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....

पता.....

शहर.....

राज्य.....पिन कोड.....ई–मेल.....

फोन.....मोबाइल.....

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं.....

बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।

सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–ए आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indiandairyassociation.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **CNRB0019009**

बैंक : केनरा बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर ए आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

नवाचार

दुग्ध उत्पादों में खाद्य सुरक्षा, मिलावट नियंत्रण एवं अनुरेखण प्रणाली

डॉ. पवार ऋतिक नामदेव एवं डॉ. शिप्रा तिवारी

एम.वी.एस.सी. स्कॉलर, पशु उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग, पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, दुवासु, मथुरा – 281001, भारत

प्रस्तावना

दूध भारतीय जनजीवन का अभिन्न अंग है। यह न केवल पोषण का मुख्य स्रोत है, बल्कि सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक काल में दुग्ध–उद्योग ने तीव्र प्रगति की है, परन्तु इसके साथ–साथ खाद्य सुरक्षा, मिलावट तथा गुणवत्ता की चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। उपभोक्ता को शुद्ध एवं सुरक्षित दूध अथवा दुग्ध उत्पाद प्रदान करना वर्तमान समय की प्रथम आवश्यकता बन गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में खाद्य सुरक्षा, मिलावट नियंत्रण एवं अनुरेखण प्रणाली (Traceability Systems) की चर्चा अत्यंत प्रासंगिक है।

खाद्य सुरक्षा और इसका महत्त्व

खाद्य सुरक्षा का तात्पर्य है–ऐसा भोजन जो स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित हो, हानिकारक रोगाणु, विषाणु, रसायन या अशुद्धियों से मुक्त हो।

- दूध शीघ्र खराब होने वाला पदार्थ है, अतः इसमें सूक्ष्मजीवों (जैसे ई.कोलाई, साल्मोनेला, लिस्टेरिया) की वृद्धि की सम्भावना अधिक रहती है।
- यदि उचित तापमान, स्वच्छता एवं भंडारण न किया जाए तो उपभोक्ता को खाद्य जनित रोगों का खतरा बढ़ सकता है।
- भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने दूध एवं दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु मानक निर्धारित किए हैं।

खाद्य सुरक्षा बनाए रखने के लिए अनिवार्य घटक

- दुग्ध दुहने से पूर्व पशुओं की स्वच्छता।
- बर्तनों व उपकरणों की स्वच्छ धुलाई।
- शीत शृंखला का पालन।
- प्रसंस्करण इकाइयों में स्वच्छ वातावरण।
- पैकेजिंग एवं वितरण के दौरान गुणवत्ता जाँच।

मिलावट नियंत्रण

मिलावट आज दुग्ध उद्योग के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। दूध में पानी, यूरिया, डिटर्जेंट, स्टार्च, कृत्रिम वसा, सिंथेटिक रंग अथवा चीनी जैसी चीजें मिलाकर कृत्रिम रूप से मात्रा या गाढ़ापन बढ़ाने की प्रवृत्ति आम है।

(क) मिलावट के दुष्प्रभाव

- पानी मिलाने से पोषण घटता है और संक्रामक रोगों की सम्भावना बढ़ती है।
- यूरिया, डिटर्जेंट अथवा फॉर्मेलिन जैसी रासायनिक मिलावटें मानव स्वास्थ्य पर विषैले प्रभाव डालती हैं।
- बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं के लिए यह और भी अधिक हानिकारक सिद्ध होता है।

(ख) मिलावट नियंत्रण हेतु उपाय

- तेज परीक्षण उपकरण–इनसे तुरंत जाँच कर मिलावट का पता लगाया जा सकता है।
- प्रयोगशाला विश्लेषण–उच्च–दबाव द्रव–गुणसूत्रीकरण, गैस–गुणसूत्रीकरण जैसे उन्नत परीक्षण।

- जनजागरूकता अभियान–उपभोक्ताओं को घर पर किए जाने वाले सरल परीक्षणों की जानकारी देना।
- कानूनी प्रावधान–मिलावट करने वालों के विरुद्ध कठोर दंड एवं आर्थिक दायित्व।

अनुरेखण प्रणाली (Traceability Systems)

अनुरेखण का अर्थ है–उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक दुग्ध की प्रत्येक इकाई का लेखा–जोखा रखना। यह आधुनिक गुणवत्ता प्रबंधन का आधार है।

(क) अनुरेखण प्रणाली के लाभ

- किसी उत्पाद में समस्या आने पर उसके स्रोत का तुरंत पता लगाया जा सकता है।
- उपभोक्ता का विश्वास बढ़ता है।
- निर्यात के क्षेत्र में भारतीय दुग्ध उत्पादों की स्वीकृति बढ़ती है।

(ख) तकनीकी साधन

- क्यूआर कोड और बारकोड प्रणाली–पैकेट पर छपने वाले इन कोड से उपभोक्ता स्रोत की जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- ब्लॉकचेन तकनीक–दूध की हर खेप का डिजिटल अभिलेख सुरक्षित रहता है, जिसे बदला नहीं जा सकता।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं सेंसर तकनीक–दुग्ध संग्रहण केंद्रों पर स्वचालित गुणवत्ता परीक्षण और अभिलेखन।

भविष्य की दिशा

दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता, सुरक्षा और उपभोक्ता विश्वास को बनाए रखने हेतु आने वाले वर्षों में अनेक नवाचार एवं प्रौद्योगिकीय सुधार आवश्यक हैं।

- ब्लॉकचेन आधारित अनुरेखण

  ब्लॉकचेन तकनीक से दुग्ध शृंखला के प्रत्येक चरण–गाय के चारे से लेकर उपभोक्ता की थाली तक–की जानकारी पारदर्शी रूप में सुरक्षित रखी जा सकती है। इससे मिलावट की संभावना घटेगी और उपभोक्ता को उत्पाद की पूर्ण यात्रा का विश्वास प्राप्त होगा।

- स्मार्ट संवेदी यंत्र

  डेयरी संयंत्रों में बायोसेंसर एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर वास्तविक समय में दूध की शुद्धता की जाँच करना संभव होगा। उदाहरणस्वरूप, वसा, प्रोटीन, एसएनएफ और अवांछित तत्वों की त्वरित जाँच डेरी फार्म पर ही की जा सकेगी।

- राष्ट्रीय स्तर पर मानकीकरण

  भारत जैसे विशाल देश में एकीकृत "राष्ट्रीय दुग्ध गुणवत्ता मानक" की स्थापना समय की माँग है, जिससे किसी भी क्षेत्र से आने वाले उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा समान रूप से सुनिश्चित हो सके।

- उपभोक्ता जागरूकता अभियान

  केवल प्रौद्योगिकी पर्याप्त नहीं है। जनजागरूकता ही मिलावट रोकथाम की आधारशिला है। विद्यालयों, ग्राम पंचायतों और शहरी उपभोक्ता समूहों को दुग्ध सुरक्षा से जोड़ना होगा।

- हरित और सतत् डेयरी

  भविष्य का डेयरी क्षेत्र केवल शुद्धता तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि वह पर्यावरण–अनुकूल भी होगा। जल, ऊर्जा एवं कार्बन पदचिह्न को घटाते हुए सतत् डेयरी प्रणाली विकसित करनी होगी।

निष्कर्ष

दुग्ध भारत की संस्कृति, पोषण और अर्थव्यवस्था की धुरी है। किंतु, मिलावट और खाद्य असुरक्षा जैसी चुनौतियाँ उपभोक्ता स्वास्थ्य और डेयरी उद्योग की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती हैं।

आज आवश्यकता है कि –

- खाद्य सुरक्षा मानकों का कठोर अनुपालन हो।
- अनुरेखण प्रणाली का व्यापक विस्तार किया जाए।
- आधुनिक तकनीक और पारंपरिक नैतिकता का संगम कर दूध को न केवल शुद्ध बल्कि "विश्वस्तरीय" बनाया जाए।
- सरकार, उद्योग, वैज्ञानिक और उपभोक्ता मिलकर एक समेकित दुग्ध सुरक्षा तंत्र विकसित करें।

यदि इन दिशा–निर्देशों पर ठोस कार्य हुआ तो भारत का दुग्ध क्षेत्र न केवल देश की पोषण सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा बल्कि वैश्विक स्तर पर "शुद्ध और सुरक्षित दुग्ध उत्पादों का अग्रणी आपूर्तिकर्ता" भी बनेगा। ■

पशुपालन और डेयरी विभाग
Department of Animal Husbandry and Dairying

मोबाइल वेटरनरी यूनिट (MVUs) की प्रमुख सेवाएँ

- पशुओं की साधारण स्वास्थ्य जाँच
- गर्भ जांच
- प्राथमिक शल्य चिकित्सा और प्राथमिक उपचार
- बीमारियों का उपचार
- पशुपालकों को जागरूकता, सलाह और उपयोगी मार्गदर्शन

RNI No.: DELHIN/2017/74023

अमूल दूध

देश के कोने-कोने तक पहुँचा रहे हैं टेस्ट ऑफ़ इंडिया

हर सुबह 18,600 गाँवो की 36 लाख महिला दूध किसान अमूल के संग्रहण केंद्रों में दूध पहुँचाती हैं. 100 से अधिक डेयरी संयंत्रों के नेटवर्क द्वारा इस दूध को 50 से भी अधिक अमूल उत्पादों में बदला जाता है, जिनमें अमूल ताज़ा और अमूल गोल्ड पैकेज्ड दूध तथा अन्य स्वादिष्ट एवं विभिन्न डेयरी उत्पाद शामिल हैं. इससे न केवल किसान सशक्त और समृद्ध होते हैं, बल्कि देश के हर कोने, हर घर तक भारत का शुद्ध और पौष्टिक स्वाद पहुँचता है.

36 लाख महिला दूध किसान

150+ SKUs और 41 वैरिएंट

18,600 गाँव

300 लाख लीटर प्रति दिन

अमूल भारत का सबसे बड़ा एफएमसीजी (FMCG) ब्रांड होने के साथ-साथ विश्व का सबसे शक्तिशाली फूड और डेयरी ब्रांड है.

अमूल दूध पीता है इंडिया

Follow us: | Visit us at www.amul.com

प्रकाशक व मुद्रक हरिओम गुलाटी द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट, ए–89/1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन, आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना